सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जून, 2014 वर्ष 13 अंक 04

दौर बीत गया

अब खिलाती है माँ मुझे भाती दूध पीने का दौर बीत गया
अब पहनता हूँ मैं तो कपड़े नंगे रहने का दौर बीत गया
अब तो फ़र फ़र किताब पढ़ता हूँ बे, ते, पढ़ने का दौर बीत गया
दसवें दर्जे में अब मैं पढ़ता हूँ प्राइमरी का दौर बीत गया
अब तो बी0ए0 की है तय्यारी हाई, इण्टर, का दौर बीत गया
अब तो ड्यूटी की फिक्र रहती है फिरते रहने का दौर बीत गया
अब तो अब्बा बनाया अल्लाह ने बेटा रहने का दौर बीत गया
बूढ़े हुए जवानी भागी मस्त रहने का दौर बीत गया
फ़िक्रे उक्बा तू कर ऐ आसी ज़िन्दा रहने का दौर बीत गया
अब तो पढ़ ले दुरूद हज़रत पर शाम होने को है दिन बीत गया

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 7275527805

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
प्रयास समाज सुधार का	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	6
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	10
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	14
इख़्लास और उसके बरकात	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	17
तबलीग़े नबवी सल्ल0 उसके उसूल	अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0	20
जिन्नात की बातें (पद्य)	इदारा	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	24
दिल व ज़बान की हिफाजत	मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	28
सू-रए-फातिहा और कुछ अज़कार	इदारा	29
अक़ाइद मंजूम	इदारा	30
बेल और पुदीने के लाभ	सम्पादक	31
धरातल के विचार से भारत		33
इस्लाम में विवाह	इदारा	35
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुआर्न की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़र:

अनुवाद- फिर अगर तुम को डर हो किसी का तो पयादा (पैदल) पढ़ लो या सवार, फिर जिस समय तुम अम्न पाओ तो याद करो अल्लाह को जिस प्रकार कि तुम को सिखाया है जिसको तुम न जानते थे[1](239) और जो लोग तुममें से मर जायें और छोड़ जायें अपनी औरतें तो वह वसीयत करदें अपनी औरतों के वासते एक वर्ष तक खर्च देना बिना घर से निकाले[2], फिर वह औरतें अगर खुद से निकल जायें तो कुछ गुनाह नहीं तुम पर इसमें कि वह औरतें अपने हक में भली बात करें और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है[3](240) और तलाक़ दी हुई औरतों के वासते कायदे के मुवाफिक खर्च देना लाज़िम (अनिवार्य) है परहेज़गारों पर[4](241) इसी प्रकार बयान फरमाता है अल्लाह तुम्हारे वास्ते हुक्म ताकि तुम समझ लो[5](242) क्या तूने उन लोगों को न देखा जो कि निकले अपने घरों से मौत के डर से और वह हज़ारों थे फिर फरमाया उनको अल्लाह ने कि मर जाओ फिर उनको ज़िन्दा कर दिया बेशक अल्लाह फज़्ल करने वाला है लोगों पर लेकिन जियादा तर लोग शुक्र नहीं करते[6](243)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यानी लड़ाई और दुश्मन से खौफ का समय हो तो नाचारी (असहाय) को सवारी पर और पैदल चलने पर भी इशारे से नमाज़ सही है अगरचे क़िब्ले की ओर मुँह न हो।

2. यह हुक्म पहले था उसके बाद जब आयते मीरास उतरी और औरतों का हिस्सा भी नियुक्त कर दिया गया और इसी प्रकार औरत की इद्दत चार माह दस दिन ठहरा दी गयी तब से इस आयत का आदेश समाप्त हो गया।

3. यानी अगर वह औरतें अपनी खुशी से साल के खत्म होने से पहले घर से निकलें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं ऐ वारसो उस काम में कि करें वह औरतें अपने हक में शरीअत के मुआफिक, यानी चाहे शादी करें या अच्छे लिबास और खुशबू का प्रयोग करें कुछ हरज नही।

4. पहले खर्च यानी जोड़ा देने का हुक्म उस तलाक़ पर आ चुका है कि न महर मुतअय्यन हो, न शौहर ने हाथ लगाया हो अब इस आयत में वह हुक्म सबके लिए आ गया परन्तु इतना अन्तर है कि सब तलाक़ वालियों को जोड़ा देना मुस्तहब है अनिवार्य नहीं और पहली सूरत में अनिवार्य है।

5. यानी जिस प्रकार अल्लाह तआला ने यहाँ निकाह, तलाक़, इद्दत के आदेश बयान फरमाये ऐसे ही अपने अहकाम व आयात को वाजेह फरमाता है कि तुम

शेष पृष्ठ..............09 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

तहज्जुद के नमाज़ की फज़ीलत

—अमतुल्लाह तस्नीम

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नमाज़ों में देर तक खड़े रहना–

हज़रत आयशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कदम मुबारक सूज जाते थे, मैंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप इतनी तकलीफ क्यों फरमाते हैं अल्लाह तआला ने तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अगले पिछले गुनाह माफ कर दिये हैं, आप ने फरमाया क्या मैं शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं। (बुखारी–मुस्लिम)

अज़ीजों को शौक दिलाना–

हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात के समय मेरे और फातिमा रज़ि० के पास तशरीफ लाये और फरमाया तुम दोनों नमाज़ नहीं पढ़ते। (बुखारी–मुस्लिम)

तहज्जुद की अहमीयत–

हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अब्दुल्लाह बहुत अच्छा आदमी है, अगर रात को नमाज़ भी पढ़ता, सालिम रज़ि० कहते हैं उस दिन से अब्दुल्लाह रज़ि० रात को बहुत थोड़ा ही सोने लगे।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

पढ़ने के बाद छोड़ देना–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० ने फरमाया ऐ अब्दुल्लाह तुम फुलाँ की तरह न करना कि तहज्जुद पढ़ते पढ़ते छोड़ दिया।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने एक आदमी का ज़िक्र हुआ कि वह रात ऐसा सोया कि सुब्ह खबर ली, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया शैतान ने उसके कानों में पेशाब कर दिया।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम में से हर शख़्स के सोने की हालत में शैतान गुद्दी पर तीन गांठें लगता है और हर गाँठ पर कहता है कि अभी रात बाकी है सोते रहो, अगर वह जाग उठा और अल्लाह का ज़िक्र किया तो एक गांठ खुल गयी फिर उसने वुज़ू किया तो दूसरी गांठ खुल गयी, फिर अगर नमाज़ पढ़ ली तो तीसरी गांठ भी खुल जाती है और वह सुबह को चुस्त फुर्त और अच्छा दिल ले कर उठता है वरना कमज़ोर बदमजा और सुस्त उठता है।

(बुख़ारी–मुस्लिम)।

तहज्जुद की फजीलत–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ लोगो सलाम को रायज करो और खाना खिलाओ और

रात को जब सब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ा करो तो तुम सलामती के साथ जन्नत में दाखिल होगे ।

(तिर्मिजी)।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अफ़जल रोज़ा, रमज़ान के बाद, मुहर्रम का रोजा है और फर्ज नमाज़ के बाद, अफजल तरीन नमाज़ तहज्जुद की है।

(मुस्लिम)।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, आपके कियाम में इतनी देर लगी कि मेरे दिल में गलत ख़्यालात आने लगे, लोगों ने कहा कैसे ख़्यालात? उन्होंने कहा मैं ने इरादा किया कि आपको छोड़ कर बैठ जाऊँ।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

रात में कुबूलीयत की घड़ी–

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि रात में एक घड़ी ऐसी है कि जो आदमी उस घड़ी में दुन्या व आखिरत की जिन भलाइयों का सुवाल करेगा अल्लाह तआला उसको कुबूल फरमायेगा और उसकी मुंह मांगी मुराद अता फरमायेगा और यह घड़ी हर रात में होती है। (मुस्लिम)

तहज्जुद की दो हल्की रकअतें–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब कोई शख़्स तहज्जुद शुरु करे तो पहले दो रकअतें हल्की पढ़े।

(मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तहज्जुद किसी तक्लीफ़ या दर्द की वजह से छूट जाती थी तो आप दिन में बारह रकअतें पढ़ लेते थे।

(मुस्लिम)

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स सो जाये और इसका वजीफा जो रात को पढ़ा करता था वह छूट जाये तो अगर उसने फज्र और जुहर के मध्य उसको पढ़ लिया तो गोया उसने रात ही को पढ़ा (मुस्लिम)

इबादत में एक दूसरे की मदद–

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब मर्द अपनी बीवी को जगाता है और फिर दोनों मिल कर नमाज़ पढ़ते हैं (यानी तहज्जुद) तो वह दोनों अल्लाह का ज़िक्र करने वालों में लिख लिए जाते हैं। (अबू दाऊद)

अगर नींद का गल्बा हो तो पहले सो जाये–

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब किसी को नमाज़ में नींद का गल्बा हो तो वह सो जाये यहाँ तक कि नींद दूर हो जाये इसलिए कि मुम्किन है कि नींद की मदहोशी में बजाये बखशिश तलब करने के अपने आपको गालियाँ देनी शुरु कर दे।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

शेष पृष्ठ ....09 पर

प्रयास समाज सुधार का

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

हमारे बचपन में शाबान का महीना बच्चों के लिए बड़ा रुचिकर होता था, चाँद दिखते ही बच्चों में खुशी की लहर दौड़ जाती थी हम देहात के गरीब घरों के बच्चे जो ईद बक़रईद की सिवय्यों के बाद साल भर मीठा खाने को तरस जाते थे शाबान आते ही चौदह शाबान का इन्तिज़ार शुरुअ़ करते इस लिए कि हमारे इलाक़े के मुसलमानों में 14 शाबान को हलवा बनता, फ़कना बनता जो महीनों खाया जाता। शायद किसी ने इस्लाह (सुधार) की कोशिश में 15 के बजाए 14 को हलवा बनाने को कहा होगा। अतएव 14 शाबान को गुड का हलवा बनता, चिकनाई हर एक को उपलब्ध नही थी, बस नाम चार की चिकनाई सूखे कड़े क़िवाम (जलाव) में हलवा बनता दो तीन रोज़ तो वह नर्म रहता, फिर खूब कड़ा हो जाता, उसका यह फाइदा मिलता कि दो माह तक खराब न होता। जियादा तर आटे का बनता, चने की दाल का भी बनता खाते पीते घरों में रवे का भी बन जाता। आटा खूब भून कर कड़ा क़िवाम (जलाव) बना कर आटा उसमें (घोटा) जाता, खाते पीते घरों में उसमें गरी छुहारा भी डाला जाता, घोटने पर वह खुश्क आटे ही की तरह हो जाता, उसे फंकना कहते हैं। बच्चे फंकना बहुत पसन्द करते, और स्कूल जाने वाले बच्चे महीनों इन्टरवल में खाने के लिए फकना ले जाते। मुझे तो चने का हलवा और फंकना खूब पसंद था। मैंने एक रोज़ माँ से पूछ लिया की अम्माँ! यह हलवा क्यों बनता है? बोलीं बेटे, अल्लाह के एक बड़े वली उवैस क़रनी गुज़रे हैं उनको अल्लाह के रसूल से बड़ी महब्बत थी, जब उन्होंने सुना कि हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दो दांत उहुद की लड़ाई में शहीद हो गये तो उन्होंने अपने सारे दांत तोड़ डाले, हम लोग हल्वे पर उनकी फ़ातिहा देते हैं उनको खाने में मुश्किल न हो। मैंने ठण्डी सांस ली और कहा अम्माँ जिस हल्वे पर अब्बू फातिहा पढ़ते हैं वह हल्वा तो हम ही लोग खाते हैं, हजरत उवैस कहाँ खाते हैं? माँ ने कहा बेटे वह उस का मजा ले लेते हैं और बचा हुआ तबर्रुक तुम लोगों को खिलाया जाता है। मैंने कहा जब वह सिर्फ मजा चखते हैं तो, बस चखने के लिए कोई भी खाना हो सकता है उसमें दांत की क्या ज़रूरत? माँ ने कहा तो फिर आइन्दा हलवा न बनाऊँगी, किसी खाने पर फातिहा दे दी जाएगी। मैंने कहा नहीं नहीं, अम्मा हलवा ज़रूर बने वरना हज़रत उवैस तो दूसरे खाने का मजा ले लेंगे मगर हम जो महीना भर मीठा हलवा खाते हैं यह हम को नहीं मिलेगा, अम्मां हंसने लगी और मैं सबक याद करने लगा।

दूसरी बड़ी खुशी हम बच्चों को इसकी होती थी कि 14 शाबान की शाम को हम लोग आतिश बाज़ी (अग्न क्रीड़ा) से खुशियां मनाते थे। 1935, 1936 में एक पैसे के दो पटाखे मिलते थे दो पैसों की फुलझड़ी और दो ही पैसे का अनार, गरीब घर का बच्चा भी एक आने (चार पैसे) के पठाखे तो दगाता ही था, मुझे और मेरे एक चचाज़ाद भाई को आतिश बाज़ी के लिए छे छे आने मिलते थे, बड़ा मजा आता था, बताशा लेकर तो हम लोग तालाब पर जाते, रौशनी देता हुआ बताशा पानी पर भागता था, बड़ा मज़ा आता था मैंने वालिद साहब से पूछा कि अब्बू यह पटाखे क्यों दागे जाते हैं? जवाब दिया बेटे शबे बरात बड़ी खुशी की रात है, खुशी मनाने का आतिश बाज़ी भी एक ज़रीआ है फिर अब तो जिहाद में तीर तलवार से नहीं अब तो बन्दूक की लड़ाई है जो एक तरह आग की लड़ाई है, आतिशबाज़ी से बच्चा आग से मानूस (परिचित) हो जायेगा, वह बन्दूक की लड़ाई में पीछे न रहेगा। मैंने कहा मगर अब्बू महंगू के भाई जोखू इकन्नी वाला पटाखा दाग रहे थे कि उनकी दो उंगलियाँ उड़ गईं। अब तो आइन्दा मैं पटाखे नहीं दागूंगा। अब्बू बोले शाबाश बेटे वह तो मैं तुम को समझा रहा था वरना चाहता मैं भी यही था, अगर तुम्हारी तरह दूसरे बच्चे भी इस तरह का फैसला लें तो यह लानत खत्म हो जाए।

यहाँ तक की बातें हमारे बचपन की थीं जो युवकों की जानकारी के लिए लिखी गईं। जब मैं समझदार हुआ और कुछ दीन की पुस्तकों का अध्ययन किया और कुछ दीन के विद्वानों से सम्पर्क हुआ और मुझे ज्ञान हुआ कि शबे बराअत में हल्वा बनाना बिदअ़त है तथा पटाखे छोड़ना अवैध है तो पटाखे वाली बात तो तुरन्त स्वीकार कर ली परन्तु हल्वे की बिदअ़त की सूचना से मेरे दिल पर चोट लगी। इस लिए कि उस गरीबी में बेचारे गरीब बच्चों को साल में एक बार गुड़ आटे का हलवा फंकना मिल जाता था वह भी बन्द हो जाएगा। अतः मैंने इस विषय पर अध्ययन किया तो मुझे कई बातें मालूम हूईं पहली बात तो यह कि हजरत उवैस करनी ने अपने दांत तोड़े यह केवल कहानी है, फिर इसको 15 शाबान से जोड़ना निराधार है। दूसरी बात यह कि बिदअत बड़ा गुनाह है, उसको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पथ भ्रष्टा (गुमराही) बताया है। बुद्धि भी इस का साथ देती है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुर्आन की आयत द्वारा बता दिया कि दीन पूरा हो गया तो उसके बाद अगर हम दीन में कोई नई बात निकालते हैं तो गोया यह मानने को तैयार नहीं कि दीन पूरा हो गया यह कितनी खराब बात होगी फिर यह बात कितनी खराब है कि जिस व्यक्ति को हम तमाम रसूलों का सरदार मानते हैं उसकी बताई हुई सीधी राह में हम कमी निकालते हैं इस

लिए बिदअत तो मुझे हर तरह बहुत ही बुरी लगी और मैं अपने गांव तथा रिश्तेदारों को बिदअत की बुराई। समझाने में सफल रहा। परन्तु क्या हल्वा बनाना भी वही बिदअत है जिसको दीन में रोका गया है? बिदअ़त की बहुत सी व्याख्याएं पढ़ी, परन्तु जो मेरे दिल को लगी वह यह है कि जो काम दीन समझ कर किया जाए और दीन में उस का आधार न हो अर्थात न कुर्आन में उसका बयान हो न हदीस में न सहाबा के कौल व अमल में, न ही पूर्वज उलमा उस पर सहमत हुए हों।

अतएव जब मैंने अपने घर वालों को हलवा बनाने से रोका तो उन्होंने कहा भय्या गुड़ हलाल, आटा हलाल, फिर उसका हलवा बनाना, खाना क्यों अवैध हुआ? मैंने समझाया हलवा बनाना खाना ना जाइज़ नहीं है, लेकिन यह बताओ हलवा क्यों बनाते हो? जवाब मिला हज़रत करनी को फातिहा देने को। मैंने पूछा इसका उद्देश्य? जवाब मिला उनको सवाब पहुँचाना, मैंने कहा, सवाब तो कोई भी खाना गरीब को दे कर पहुँचाया जा सकता है, हलवा ही क्यों? हज़रत करनी दौरे सहाबा के हैं, किसी सहाबी से या ताबई से उनको 15 शाबान का हलवा गरीब को खिला कर सवाब पहुँचाने की बात कहीं नही मिलती अतः यह नई बात दिल से निकालो हज़रत करनी को कोई भी खाना गरीब को दे कर कभी भी सवाब बख़्शा जा सकता है। अगर यह बात मान लो और इस पर अमल भी हो तो कभी कभार 15 शाबान को भी हलवा गरीब को दे कर हज़रत करनी को सवाब बख़्श सकते हो यह बात लोगों की समझ में आई।

मेरी इस बात से कई लोग ऐसा प्रभावित हुए कि शबे बराअत में हलवा बनाना छोड़ दिया लेकिन जल्द ही उन्होंने कहा कि हमारे पड़ोस के लोगों ने आप की बात नहीं मानी उनके यहां अब तो गुड़ का नहीं शकर, सूजी और चने की दाल के ज़ायकेदार हलवे बनते हैं जो मेवे जात से पुर होते हैं, हमारे ना समझ बच्चे उनके घर पहुँच जाते हैं, और हलवा खा आते हैं, फिर उन पड़ोसियों से हमारे अच्छे सम्बन्ध हैं वह हल्वे का उपहार भेजते हैं तो हमको शर्मिन्दगी होती है ऐसी सूरत में हमारे घरों में हल्वा बनाना आवश्यक लगता है और मजबूरन हम भी हल्वा तैयार करते हैं। मैंने कहा अगर आप उसे दीन नहीं समझते, एक सामाजिक आवश्यकता समझ कर हल्वा बनाते हैं तो मेरी समझ में कोई हरज नहीं और ऐसे में अगर कुछ हल्वा गरीब घरों में भेज दें तो इनशाअल्लाह सवाब भी मिलेगा और इस सवाब को आप अपने पुरखों को या बुजुर्गों को बख़्श भी सकते हैं बस इतना सुधार करलें कि कभी 12 शाबान को हल्वा बना लें, कभी आगे पीछे और पड़ोसी का उपहार आने से पहले आप पड़ोसी को उपहार भेज दें, फिर कभी कभार 14 या 15 शाबान को भी हल्वा बना लें ताकि यह बात भी सिद्ध हो जाए कि 14 या 15 शाबान को हल्वा

बनाना खाना भी जाइज़ है इस तरह आप बिदअत के गुनाह से बच जाएंगे।

14, 15 शाबान के बीच की रात जागना और इबादत करना फिर 15 को रोज़ा रखने के विषय में जो हदीस बयान की जाती है वह कमज़ोर है लेकिन पन्दरहवीं रात को जाग कर इबादत करने और 15 को रोज़ा रखने से रोका भी नहीं गया है अतः ज़रूरी समझे बिना अगर रात में इबादत की जाएगी, दुआ मांगी जाएगी और दिन में रोज़ा रखा जाएगा तो सवाब ज़रूर मिलेगा इसी प्रकार किसी विशेष दुआ को ज़रूरी न समझा जाए और किसी विशेष नमाज़ को ज़रूरी न समझा जाए तो जो दुआ चाहें मांगे बस खैर की दुआ हो और जितनी चाहें नमाज़ पढ़ें नमाज़ नफ़्ल नमाज़ों जैसी हो, उसकी कोई नई शक्ल न हो।

अल्लाह तआला हमसब को बिदआत से बचाए और नेक आमाल करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन। ❑❑

क़ुर्आन की शिक्षा..............

समझ लो और अमल कर सको, यहाँ निकाह व तलाक़ के अह्काम समाप्त हो गये।

6. यह पहली उम्मत का किस्सा है कि कई हजार लोग घर बार को साथ लेकर देश से भागे, उनको दुशमन का डर हुआ था और लड़ने से जान चुराई, या ड़र हुआ था वबा (छूत छात वाली बीमारी) का और तक्दीर पर यक़ीन और भरोसा न किया फिर एक मंजिल पर पहुँच कर अल्लाह के हुक्म से सब मर गये फिर सात दिन बाद पैग़म्बर की दुआ से ज़िन्दा हुए कि आगे के लिए तौबा करें, इस हाल को यहाँ इस लिए बयान फरमाया कि काफिरों से लड़ने या अल्लाह की राह में माल खर्च करने में, जान और माल की महब्बत की वजह से पीछे न हटें, और जान लें कि अल्लाह मौत भेजे तो छुटकारे की कोई सूरत नहीं, और ज़िन्दगी देना चाहे तो मुर्दे को जब चाहे तुरन्त ज़िन्दा कर दे, ज़िन्दे को मौत से बचा लेना तो कोई चीज़ ही नहीं फिर उसकी तामीले हुक्म में मौत से डर कर जिहाद से बचना या गरीबी से डर कर सद्क़ा और दूसरों पर एहसान या दरगुज़र और फ़ज़्ल से रुकना बददीनी के साथ बेवकूफी भी है। ❑❑

प्यारे नबी की प्यारी ....

रमज़ान में नवाफिल पढ़ने का बयान–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स रमजान में ईमान और अज्र व सवाब की खातिर रात को नवाफिल पढ़ेगा तो उसके अगले सब गुनाह बख़्श दिये जायेंगे। (बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कियामे रमज़ान की लोगों को तर्गीब दिया करते थे लेकिन हुक्म नहीं देते थे, फरमाते थे जो इस महीने मे ईमान व अज्र की खातिर कियाम करता है उसके अगले सब गुनाह मुआफ हो जाते हैं। (मुस्लिम)

❖❖❖

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

अंसार से एक मोजिज़ाना खिताब–

ग़ज़व–ए–हुनैन में कबीले हवाज़िन के लोगों ने अपनी मज़बूती और जंग का मुकाबला करने के लिए अपने सारे माल व मता और अहलो अयाल के साथ शिरकत की थी ताकि उनके फौजियों को अपने घर पर अहलो अयाल याद न आएं और यकसू हो कर मैदाने जंग में ही मुतवज्जेह रहें और माल व मता की मौजूदगी से उनको वहीं अपने जमे रहने की ताक़त हासिल हो, यह फायदा तो उनको हासिल नहीं हुआ अलबत्ता उनको जब शिकस्त हुई तो उनका वह माल व मता भी उनके हाथ से जाता रहा जो बहुत ज़्यादा था जो आमतौर पर मवेशियों की शक्ल में था, वह सब मुसलमानों को माले ग़नीमत के तौर पर हासिल हो गया। जिसकी बहुत बड़ी तादाद थी, इस जंग के अलावा किसी जंग में इतना नहीं हासिल हुआ था, माले गनीमत आमतौर पर जंग में शरीक़ होने वाले मुसलमानों में और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इख़्तियारी मदों में तक़सीम किया जाता था। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इख़्तियार से कुरैश के उन लोगों में जो अब इस्लामी सत्ता में आ चुके थे और मुसलमानों में दाख़िल हो चुके थे, अगरचे उनमें से बड़ी तादाद ने ऊपरी दिल से इस्लाम को इख़्तियार किया था, इस्लाम से तअल्लुक़ बढ़ाने और इस्लाम की ताबेदारी में पुख़्तगी पैदा करने के लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी दिलदारी मुनासिब समझी और उनको भरपूर तरीके से मालेग़नीमत में हासिल शुदा मवेशी इनायत फरमाए और पुख़्ता ईमान वाले मुसलमान जो शरीके जंग रहे थे उनको आमतौर पर न देने के बराबर माल इनायत फ़रमाया। इस पर अन्सार कराम की जो असल अहले मदीना थे, बाज़ को यह ख़्याल हुआ कि मक्का के हालात न मुआफिक़ होने की वजह से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आए थे। अब हालात वहां सही हो जाने पर शायद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना से मक्का मुन्तक़िल हो जाएं। शायद इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहां के लोगों की बड़ी दिलदारी की, हालांकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हर अमल "वही–ए–इलाही" के मुताबिक़ होता था, उनके मुतअल्लिक शख़्सी और ज़ाती फायदे को तरजीह देने का ख्याल सही भी नहीं था और मुनासिब भी न था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इत्तिला मिली आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अन्सार को जमा कराया और उनके आप पर शुबहा करने पर कोई नागवारी ज़ाहिर न फरमाई बल्कि बड़ी दिलदारी और महब्बत के ढंग में अपनी

बात की वज़ाहत फ़रमाई।

यह वाकि़या हज़रत अबू सईद खुदरी के बयान किये हुऐ अल्फ़ाज़ में दरजज़ेल है: "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालेग़नीमत में जो बकसरत हासिल हुआ था बड़े अतिये कुरैश के लोगों को अता फरमाए बाज़ दूसरे अरब के क़बाएल के लोगों को भी अता फरमाया और हज़रात अन्सार का उसमें कोई हिस्सा नहीं रखा तो बाज हजराते अन्सार के दिलों में इस सिलसिले में कुछ शिकायत आयी, यहां तक कि उनमें आपस में तज़किरा भी हुआ और बात कही गयी। कुछ ने यह कहा कि यह समझ में आ रहा है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने पिछले हम वतनों में चले गए तो हज़रत सअद बिन उबादा (सरदार ख़ज़रज) जो हज़राते अन्सार के सरबराहों में एक सरबराह थे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्सार के उन लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिलसिले में अपने दिलों में इस बात से शिकायत महसूस की है कि जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जंग से हासिलशुदा माल की तकसीम में इख्तियार की है वह यह कि आपने मालेग़नीमत ज़्यादा से ज़्यादा अपनी क़ौम में तकसीम किया और बहुत अतिये दिये और दूसरे कबीलों को भी दिये, अलबत्ता अन्सार का हिस्सा नहीं रखा और अन्सार के उस कबीले को कुछ नहीं मिला। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इस सिलसिले में खुद तुम्हारा ख़्याल क्या है? उन्होंने कहा ऐ! अल्लाह के रसूल मैं भी अपनी क़ौम का फ़र्द हूँ, फ़रमाया कि तुम अपनी क़ौम को इस इहाते में जमा करो, रावी कहते हैं कि मुहाजिरीन के कुछ लोग आए तो उनको उन्होंने आने दिया फिर मुहाजिरीन में से दूसरे लोग आए उनको लौटा दिया बहरहाल सब जमा हो गए तो हज़रत सअद आए और अर्ज़ किया कि अन्सार के यह अफरादे कबीला आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए जमा हो गए तो उनके पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए।"

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर हज़रात अन्सार को जो खिताब फरमाया उससे यह बात अयाँ (प्रकट) हो जाती है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने असहाब का इस्लाम से तअल्लुक मज़बूत करने के लिए किस महब्बत और हिकमत से मामला फ़रमाते थे कि किसी मसअले में उनके दिलों में किसी तरह की शिकायत महसूस होती तो महब्बत और दिलदारी के तकाज़ों का लिहाज़ करते हुए ऐसा उस्लूबे कलाम इख्तियार फरमाते जो दिलों को मुतअस्सिर और पूरी तरह हमनवा बना देता। चूंनाचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले अल्लाह तआला की हम्द बयान की और उसके लायक़ जो "सना" है वह बयान की, फिर फरमायाः—

"ऐ हज़रात अन्सार! यह क्या बातें हैं जो आप

लोगों की निस्बत से मुझ तक पहुँची हैं और वह क्या एहसास है जो आप लोगों ने अपने दिलों में महसूस किया है? क्या ऐसा नहीं है कि मैं आप लोगों के पास आया और हालत यह थी कि आप सब लोग रास्ते से भटके हुए थे अल्लाह तआला ने मेरे ज़रिए आप को रास्ता दिखलाया और आप लोग माली ताकत के मामले में दूसरों के मोहताज थे अल्लाह तआला ने मेरे ज़रिए आप लोगों की यह मोहताजी खत्म की और आप एक दूसरे के दुश्मन बने हुए थे अल्लाह ने आपके दिलों में आपस की उलफत पैदा की, यह सुन कर हज़रात अन्सार ने कहा कि वाकई अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बड़ा एहसान है और वह बरतर हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ऐ अन्सार भाईयों क्या तुम मुझसे उसके जवाब में कुछ नहीं कहते, उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल हम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क्या जवाब दे सकते हैं एहसान व करम अल्लाह और रसूल ही का है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बखुदा तुम अगर चाहो तो तुम यह कह सकते हो और तुम यह कहोगे तो सच कहोगे और मैं तुम्हारी तस्दीक़ भी करूंगा कि आप हमारे पास इस हालत में आए थे कि आपको झुठलाया जा चुका था, उस वक्त हमने आपकी तस्दीक़ की, लोगों ने आपको छोड़ दिया था उस वक्त हमने आपकी मदद की, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी जगह से निकाले हुए थे हमने आपको जगह दी और आप दूसरों के सहारे के मोहताज थे, हमने आपके साथ हमदर्दी की, फिर आपने फरमायाः ऐ अन्सार भाईयो! क्या तुम्हारे दिलों में मेरे मुतअल्लिक शिकायत पैदा हुई और यह शिकायत दुन्या की कुछ थोड़ी सी मज़ेदार चीज़ के सिलसिले में हुई कि जिसको देकर मैंने कुछ लोगों को मानूस करने की कोशिश की है कि वह इस्लाम ले आएं और मैंने तुम को तुम्हारे इस्लाम के सहारे के सुपुर्द कर दिया। ऐ अन्सार भाईयो क्या तुम इस पर राज़ी और ख़ुश नहीं कि दीगर लोग यहां से बकरियाँ और ऊँट ले ले कर लौटें और तुम अल्लाह के रसूल को लेकर अपने घरों की तरफ लौटो।"

क़सम है उस ज़ात की जिसके कब्ज़े में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जान है, तुम जो लेकर लौटोगे यक़ीनन उससे बेहतर है जिसको लेकर यह लोग लौटेंगे। मैं तो अगर हिज़रत करने का अमल ज़रूरी न होता तो अन्सार ही के अन्दर का शख़्स होता और मेरा तरज़े अमल यह है कि लोग किसी एक घाटी या वादी में चलें और अन्सार किसी दूसरी घाटी या वादी में चलें तो मैं अन्सार ही वाली घाटी और वादी में चलूंगा। अन्सार तो शिआर हैं (यानी उस लिबास की तरह है जो हर वक्त जिस्म से लगा रहता है) और दीगर लोग ऊपरी कपड़ों की तरह हैं (यानी ऐसे कपड़े जिनकी ज़रूरत हर वक्त नहीं पड़ती)। .... फिर आपने

इस दुआ पर ख़िताब पूरा किया कि ऐ अल्लाह अन्सार पर रहम फरमा, और अन्सार की औलाद पर रहम फरमा, रावी कहते हैं कि यह सुनना था कि लोग रोने लगे और इतना रोए कि दाढ़ियां उनके आंसुओं से तर हो गई और उन्होंने कहा कि हम बिल्कुल राज़ी और खुश हैं कि हमारे हिस्से में अल्लाह के रसूल आएं, इस तरह हम जियादा फ़ाइदे में होंगे"[1]

ग़ज़्व–ए–हुनैन में माले ग़नीमत की बहुतात हुई थी, और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्के वालों को मानूस करने के लिए जो 22 साल से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके असहाब से मुख़ालिफ़त और दुश्मनी में गुज़ार रहे थे और मजबूर होकर इताअत क़बूल कर ली थी, उनकी इस इताअत को ज़ाहिरी के बजाए दिल से कराने की एक तदबीर के तौर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको बहुत एहसानमन्द करने की तदबीर की, और हज़रात अन्सार को वह माल न देकर उनके जज़्ब–ए–ईमान को काफी समझा, और वह वाक़ई ऐसे ही जज़्ब–ए–ईमानी के थे कि अल्लाह की रज़ा और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत के मुक़ाबिले में उसकी कोई हक़ीक़त नहीं समझते थे लेकिन उनको चूंकि यह शुब्हा हुआ था कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने क़बीले और वतन के लोगों के मानूस व मुतीअ हो जाने से अपने वतन वापस होने का इरादा कर सकते हैं, यह उनके लिए सदमें की बात थी, और उस सदमें की वजह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपने क़बीले और हम वतनों के साथ बहुत सुलूक करना उनको एक अलामत महसूस हुआ था, लिहाज़ा उनमें आपस में थोड़ा चर्चा हुआ और फिर उन्हीं में से एक शख़्स ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दिल की बात ज़ाहिर कर दी ताकि बात साफ़ हो जए और उनका यह शुब्हा सही नहीं हुआ और वह सही था भी नहीं, क्योंकि अल्लाह का रसूल ईमान और रज़ाए इलाही की ही बुन्याद पर अमल करता है, और उसकी रहनुमाई "वही" से होती रहती है, अपनी ज़ाती मसलहत और ख़्वाहिश से नहीं करता, लेकिन यह बहुत अच्छा हुआ कि बात कही गई और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस उलझन को साफ़ कर दिया, और ऐसे अल्फ़ाज़ में साफ़ किया जो पत्थर जैसे दिलों को भी पिघला दे चुनांचि हज़रात अन्सार यह सुनकर तड़प उठे और खुशी के आंसुओं से इसका इज़हार किया।

उमर–ए–जअ़राना–

इन बड़े और अहम कामों से फ़ारिग़ होने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उमरा किया जो मक्के में अपने दाख़िले के वक़्त न कर सके थे, अब इसका मौक़ा था, इसलिए आपने अख़तियार फ़रमाया, यह उमर–ए–जअ़राना के नाम से ज़िक्र किया जाता है, उमरे से फ़रागत के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए, यह माह ज़ी क़अदा सन् आठ हिजरी का वाक़िया है।

❖❖❖

---

1. सीरत इब्ने हिशाम 2/499

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

एक दस्तरख्वान पर सामूहिक रूप से भोजन करना और छूत-छात के प्रति उपेक्षा-

घरों में सामान्यतः परिवार के लोगों का (यदि कोई मजबूरी न हो) एक साथ बैठकर खाने का दस्तूर है। अब शहरी ज़िन्दगी की व्यस्तता, कार्यालयों एवं विद्यालयों के समय—असमय के कारण तथा अन्य कठिनाईयों की वजह से एक ही समय और साथ बैठ कर खाना मुश्किल हो गया है। फिर भी बहुत से घरों में रिवाज है कि पुरुष एक दस्तर—ख्वान पर और महिलाएं अलग दस्तर—ख्वान पर साथ बैठ कर भोजन करती हैं। कुछ रईस घरानों में पुरुष तथा महिलाएं एक ही दस्तरख्वान पर सम्मिलित होती हैं। इस बात से सभी भली प्रकार अवगत हैं कि मुसलमानों में छुआ—छूत नहीं। एक प्लेट में कई कई आदमी मिलकर खा लेते हैं और एक दूसरे का झूठा भी खा पी लेने कोई बुरी बात नहीं समझते। अब पाश्चात्य सभ्यता तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी निर्देशों ने, जिनका प्रभाव सब पर पड़ा है, इस समता तथा सहकारिता में कुछ विघ्न डाल दिया है।

हिन्दुस्तानी मुसलमानों के यहाँ साधारणतया बर्तन कुछ बड़े होते हैं। दावतों तथा महमानदारी के अवसरों पर बर्तनों में बचा हुआ खाना आम तौर पर फेंका नहीं जाता। अरब में निःसंकोच घर वाले स्वयं उसे प्रयोग कर लेते हैं। हिन्दुस्तान में भी कहीं कहीं ऐसा होता है, किन्तु अधिकतर वह नौकरों या ग़रीबों के काम आता है।

वर्ण व्यवस्था का प्रभाव मुसलमानों पर-

हिन्दुस्तानी मुसलमान इस देश की वर्ण व्यवस्था और वंशगत अथवा आर्थिक ऊँच नीच के आधार पर विशिष्ट व्यवहार की प्रक्रिया से अत्याधिक प्रभावित हुए हैं, और अब कुछ धार्मिक तथा विशुद्ध परिवारों को छोड़ कर घर वाला और उसके सम्बन्धी तथा अतिथिजन नौकरों के साथ बैठ कर या काम काज करने वाले मुसलमानों के साथ बैठ कर खाने को असंगत समझते हैं। अतः सामान्यता उनको अलग से खाना दे दिया जाता है, या बाद में भोजन करते हैं। वरन खानदान तथा अपनी बिरादरी के लोगों के साथ जो वंशानुकूल होते हैं, किसी प्रकार का भेद भाव नहीं बरता जाता और वे भी इसको सहन नहीं करते। अनेक व्यवसाय सम्बन्धी बिरादरियों में पंचायत तथा बिरादरी की सुसंगठित व्यवस्था अब भी प्रचलित है और उसके नियमों का पालन, बिना किसी छूट के, सबको करना पड़ता है। किसी नैतिक अपराध अथवा नियम भंग करने पर पंचायत की ओर से उस को दण्ड दिया जाता है। सबसे बड़ा दण्ड यह है कि उसको "टाट बाहर" कर

दिया जाए और उसका हुक्का पानी बन्द कर दिया जाय।

इस्लामी समाज में पेशे न स्थायी हैं और न तिरस्कृत–

मुसलमानों में विभिन्न व्यावसायों तथा पेशों की न तो स्थिर एवं स्थायी रूप से कोई हैसियत है कि उनमें कोई परिवर्तन न हो सके और न इनके आधार पर वर्गों तथा जातियों का निर्माण होता है। लोगों ने समयानुसार विभिन्न आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों के आधार पर किसी पेशे को अपना लिया। कभी तो वह पेशा उसी तक सीमित रहा और कभी–कभी कई पीढ़ियों तक चलता रहा। अब भी कुछ बिरादरियों में एक ही प्रकार का काम होता है परन्तु न तो इसका कोई धार्मिक महत्व है और न वह मुस्लिम समाज का कोई अटल कानून है।

इन बिरादरियों में जो व्यक्ति जब चाहता है अपना पेशा या व्यवसाय बदल देता है और इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती और न इस्लाम में कोई पेशा बुरी दृष्टि से देखा जाता है। इस्लाम के केन्द्र (मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा) और अरब देशों में अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों और सम्मानित मुसलमानों के नाम के साथ उस पेशे का नाम सम्बद्ध है जो उनके किसी पूर्वज ने किसी समय किया था, और इसमें न उनको कोई ग्लानि अनुभव होती है और न किसी दूसरे की दृष्टि में वह हीन समझे जाते हैं[1]।

मुसलमानों की विशिष्ट पोशाक विभिन्न सभ्यताओं की यादगार–

समयानुकूल हिन्दुस्तानी मुसलमानों का एक विशिष्ट पहनावा भी बन गया जो यहीं की विशेषता है! यह पहनावा अथवा लिबास मुग़लों के अन्तिम काल और दिल्ली, लखनऊ तथा हैदराबाद की सभ्यताओं की यादगार है। इसमें देश की ऋतु सम्बन्धी स्थितियों, सौम्य अभिरुचियों, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों आदि का ध्यान रखा गया है। हिन्दुस्तान के विभिन्न राज्यों और उत्तर तथा दक्षिण में, रईसों तथा मध्य वर्ग के लोगों के पहनावे में अधिक अन्तर नहीं है। पैजामा (अपने विभिन्न प्रकारों, शिलवार, चुस्त, ग़रारे आदि) के साथ कुर्ता (जिसमें कमीस भी शामिल है और शेरवानी) इसके प्रमुख अंग हैं। अचकन और अंगर्खे का रिवाज अब करीब–करीब समाप्त हो गया है। टोपियों के विभिन्न आकार प्रचलित हैं, जिनमें दो पल्ली (जो अवध तथा बिहार में अधिक प्रचलित है), मख़मली टोपी जो रामपुरी कैप कहलाती है, किश्ती दार (जो अजमल कैप या गांधी कैप के नाम से याद की जाती है, और जिसकी दीवार उन टोपियों से कुछ ऊँची होती है, जो हिन्दू जन इस्तेमाल करते हैं), पगड़ियों, साफों का रिवाज आलिमों (धार्मिक विद्वानों) के भी विशिष्ट वर्ग में सीमित रह गया है। शादियों के

---

1. यथा–इस समय जो सज्जन हरम शरीफ़ (मक्का मुकर्रमा की सबसे बड़ी मस्जिद जिसमें काबा शरीफ़ स्थित है) के ख़तीब और इमाम हैं उनके नाम का आवश्यक अंग ख़य्याम (दर्जी) है। इसी प्रकार अनेक आलिमों के मान के साथ हल्लाक़ (नाई) ज़य्यात (तेली), सव्वाफ़ (रोईवाला), क़स्साब (गोश्त वाला) लगा हुआ है और इसमें किसी भी प्रकार प्रकार को कोई हीनता का भाव नहीं पाया जाता।

अवसर पर दुल्हा के अब भी पगड़ी बाँधने का बहुत जगह रिवाज है, जिन क्षेत्रों में लुंगी बाँधने का रिवाज है या घरों या खेतों में सुविधा एवं सरलता के लिए लुंगी बाँधी जाती है, तो उसका ढंग धोतियों से अलग होता है और आसानी से पहचाना जा सकता है।

मुसलमानों की भवन निर्माण कला और उनकी रिहायशी अभिरूचि-

अब पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव तथा नगरों से सम्बन्धित योजनाओं के कारणवश मुसलमानों तथा अन्य वर्गों के मकानों तथा निर्माण प्रणाली में कोई अन्तर नहीं रहा और न रह सकता है। बड़े नगरों में सामन्य रूप से लोग किराये के कमानों में रहते हैं। नये मकानों के निर्माण का भी क़रीब क़रीब एक ही माडल चल गया है, परन्तु पूर्व काल में मुसलमनों के मकानों की विशेषता यह होती थी कि वह ज़्यादा हवादार (किन्तु पर्दे दार) खुले हुए और लम्बा चौड़ा आंगन होता था। मुसलमानों के मकानों में हर दौर में इसका लिहाज़ रखा जाता था कि शौचालय के क़दमचों की दिशा काबा शरीफ़ की ओर न हो, इसलिए कि शौच के समय मुसलमानों को क़ाबा शरीफ़ की ओर मुंह या पीठ करना मना है, अतः वह सामन्यताः उत्तर दक्षिण बने होते हैं। इस विषय में समस्त देशों में सामान्जस्य पाया जाता है[1]। स्नानागारों की व्यवस्था कदाचित् मुसलमानों की विशेषता है। वह सामान्यता पर्देदार होते हैं। पवित्रता के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोंण एवं स्तर के कारण बर्तनों, जल तथा भूमि के पवित्र होने का आयोजन किया जाता है। इस बारे में बड़ी सावधानी रखी जाती है कि कुत्ता या ऐसा कोई पशु उनको अपवित्र न करने पाए।

मकानों की सजावट तथा इस्लामी सभ्यता की छाप-

बाहर का कोई आदमी यदि किसी मुसलमान के घर जाये तो उसको दिखाई पड़ेगा कि ताक़ पर क़ुरआन मजीद विभिन्न साइज़ के कपड़ों के जुज़दानों में बन्द रखे हुए हैं। इनमें कुछ बच्चों के पढ़ने के हैं, कुछ बड़े बूढ़ों के। मध्यवर्ती घरानों में प्रातः क़ुरआन मजीद की तिलावत (क़ुरआन पाठ) का दस्तूर है जीव धारियों का चित्र इस्लाम में निषिद्ध है, अतः धर्मयुक्त घरानों में चित्रों के बजाय, सुन्दर फ्रेमों में सुसज्जित क़ुरआन मजीद की आयतें या ख़ुदा का ज़िक्र, या विभिन्न उपदेशों अथवा उपयोगी कविताओं की पंक्तियां दीवार में लटकती दिखाई देंगी। अब पाश्चात्य सभ्यता तथा आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से और धर्म के प्रति उदासीनता के कारण खाते पीते घरानों में तस्वीरों का रिवाज आम हो रहा है और इसको अनुचित समझा जाता है।

❖❖❖

1. अनेक देशों में उत्तर दक्षिण की विशेषता नहीं। यदि कोई देश काबा शरीफ़ के उत्तर अथवा दक्षिण की दिशा में है तो वहां शौचालय पूर्व पश्चिम की दिशा में होगा।

अनुरोध

पाठक "सच्चा राही" के खरीदार बना कर सहयोग दें!

इख़्लास और उसके बरकात व फ़ायदे

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

इख़्लास का सम्बन्ध दिल से है—

सारा मस्अला दिल का है, यदि दिल ठीक हो जाये तो सारी चीज़ें ठीक हो जाती हैं, नमाज़, रोजा, जकात, हज, मुआमलात, तअल्लुकात, सब ठीक हो जाते हैं, मानों कुल की कुल ज़िन्दगी ठीक हो जाती है, और अगर दिल ठीक नहीं है तो कोई चीज़ ठीक नहीं हो सकती है, इसलिए सहाबये किराम से लेकर इस दौर तक के हमारे बुजुर्गों ने दिलों को ठीक करने की मेहनत की, कि यह ठीक हो जाये, जैसे "पारा" छोटा सा होता है और थर्मामीटर कितना बड़ा होता है उसके अन्दर बंद करने के लिए कितनी मेहनत की जाती है तब जा कर बंद होता है और फिर वह अपना पूरा काम करता है, जिस प्रकार "पारे" को सुरक्षित करने के लिए शीशे में रखते हैं उसी प्रकार दिल को काबू में रखने के लिए नमाज़ें पढ़वाई जाती हैं, रोज़ा रखवाया जाता है, प्रेम का रहस्य रोज़ा और हज है, अल्लाह की हुकूमत का रहस्य है नमाज़ और ज़कात, गोया अल्लाह को हाकिम माना नमाज़ और ज़कात के वास्ते से, अल्लाह को महबूब माना रोजे और हज के वास्ते से, अल्लाह की हाकिमीयत और महबूबीयत इन दोनों के वास्ते दिल को क़ाबू में किया जाता है, फिर वह क़ाबू में आ जाता है तो पूरे जीवन काल की व्यवस्था ठीक हो जाती है, इसी लिए कभी आप उन लोगों का व्यवहार खराब नहीं देखेंगे, कहीं कभी कुछ खराब हो जाता है तो उसको भी तुरन्त ठीक कर लेते हैं, जहाँ खराबी हुई तुरन्त चेकअप कर लिया, बेजा गुस्सा नहीं होते, जहाँ पर गुस्सा होना चाहिए वहीं पर गुस्सा होते हैं, यह उस समय होगा जब थर्मामीटर के अन्दर "पारा" आ जाये, जब नमाज़, रोज़ा, जकात हज के शीशे के अन्दर पारये दिल आ जाता है, तो फिर हर चीज़ ठीक हो जाती है, और पहचानना आसान हो जाता है, मानो मुख्य चीज़ दिल है, और दिल ही से इख़्लास का सम्बन्ध है।

इख़्लास के लिए दिल खाली कीजिए—

दिल के अन्दर सिर्फ अल्लाह होना चाहिए, और जब गैरुल्लाह होगा तो फिर अल्लाह कहाँ होगा, यह है कुल और सत्य बात, अल्लाह तआला उसी समय दिल में आते हैं जब दिल खाली होता है और अगर दिल में कुछ होगा तो क्यों आयेगा? देखिए अगर यहाँ कोई बहुत बड़ा आदमी आ जाये तो क्या करते हैं? सड़क ठीक की जाती है, फिर जिस घर में दाखिल होते हैं उसको साफ किया जाता है, लेकिन जहाँ पर वह आ कर बैठता है तो उसको फूलों से सजाया जाता है, तब वह आता है, अगर उसको बता दिया जाये कि

सड़क भी टूटी है, जहाँ जाना है गड्ढे ही गड्ढे हैं और जहाँ बैठना है वहाँ बदबू आ रही है तो वह नही आयेगा, तो क्या अल्लाह को गर्वनर, या राष्ट्रपति से कम समझा है? यहाँ भी तीन चीजें हैं, अपने वातावरण को ठीक करो, अपने शरीर को ठीक करो, फिर अपने दिल को सजाओ, तब ईमान साहब आयेंगे, और दिल चमक उठेगा, इसी लिए नज़ाफत है, तहारत है, तज़्किया है, "नज़ाफत" जैसे बाहर की सड़क ठीक की गई, "तहारत" शरीर को ठीक किया गया, दिल से हसद, कीना कपट सब निकालना पड़ेगा तब जा कर ईमान साहब आयेंगे, हम लोगों ने ईमान को इतना आसान और हल्का समझ रखा है कि चम्गादड़ों से दिल को भरलो और मक्ड़ियों से उसको खराब कर लो और तिनकों से उसको बिल्कुल बर्बाद कर दो, और उसके बाद हज़रत ईमान से कहिए कि आजायें, कहां से आ जायेगा? और जब ईमान नहीं आयेगा तो फिर मज़ा नहीं आयेगा इसी वजह से जियादातर लोग मज़े से वंचित हैं, और जब दिल में मज़ा नहीं तो वास्तव में किसी चीज़ में मज़ा नहीं, अस्ल मज़ा तो दिल का है।

उलफत में बराबर है वफा हो कि जफा हो
हर चीज़ में लज़्ज़त है गर दिल में मज़ा हो

यह दिल अजीब व गरीब चीज़ है, अल्लाह तआला को किसी की शिर्कत पसंद नहीं है, इस मुआमले में सिर्फ हम लोगों का हाल यह है कि अगर कोई आ कर यह कहता है कि हम आपसे मिलने अये हैं मगर उसके आगे का मक्सद कुछ और होता है, हमारे हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 के साथ बहुत पेश आता था हम लोग बहुत तमाशा देखते रहते थे, एक साहब आये, और कहा हज़रत आपकी ज़ियारत के लिए आये हैं, हज़रत मौलाना रह0 कभी कभी ना गवारी में कहते सही बताओ जल्दी बताओ किस लिए आये हो? वह कहते हज़रत आपसे मिलने आये हैं, हज़रत समझ लेते कि तस्दीक वगैरह के लिए आये हैं तो हज़रत रह0, मौलाना मो0 राबे हसनी नदवी (नाजिम नदवतुल उलमा हाल) से कहते थे कि कुछ इनको लिख के दे दो, उसके विपरीत एक साहब हमारे सामने आये, जियादा पढ़े लिखे नहीं आम आदमी थे वह आये, हजरत ने पूछा कैसे आये? कहा हज़रत आपसे मिलने आये हैं, कहा मेरे पास बैठो, अपने पास बिठा कर खाना खिलाया कि यह हमसे मिलने आये हैं, अब आप यह बताइये कि इन्सानों का जब यह हाल है, तो खुदा तो खुदा है वह कैसे शिर्कत गवारह कर सकता है—

अल्लाह तआला दिलों को देखता है—

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि मैं तुम्हारे जिस्मों और तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों को देखता हूँ कि उसका ध्यान किधर है।

अल्लह तआला ने किसी को काला, किसी को गोरा, किसी को लम्बा, किसी को ठिगना बनाया, अब आप किसी की खूबसूरती से उसकी अच्छाई व ख़राबी नापने लगो कि यह जियादा अच्छे होंगे, यह सब नहीं, बल्कि दिल किसका खूबसूरत और हसीन है, यह देखने की बात है, और हसीन होता है जब इख्लास से मामाल हो, इसलिए कि हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उस शख़्स पर अल्लाह रह्म फरमाते हैं जो शख़्स मेरी बात सुने और दूसरों तक पहुंचाये फिर फरमाया कि तीन सिफतें ऐसी हैं जिसके अन्दर वह सिफतें पाई जायेंगी उसके अन्दर कोई रूहानी बीमारी नहीं आयेगी कोई खोट नहीं होगा, उसका दिल धोका नहीं देगा, न ही धोका खायेगा, वह क्या चीजें हैं? जो काम भी करे अल्लाह के लिए इख़्लास से करे, और जितने लोग हैं चाहे वह आम हों या खास सबके साथ भलाई का मुआमला करे, अच्छा सुलूक करे, और उनकी जमात के साथ लगा रहे, मुसलमानों की जमाअत से अलग न हो, डेढ़ ईंट की मस्जिद न बनाइये, सबके साथ रहे।

आजकल की यह बीमारी है कि लड़ाई हो गयी तो उसके मुकाबले के लिए खड़े हो गये, एक तो झगड़ा किया उसके बाद मदरसा उसकी मुख़ालफत (विरोध) में खोल कर या कोई और दूसरा काम उसके विरोध में करके कहते हैं कि अब तो दो दो काम हो गये माशा अल्लाह गलत तावील करते हैं इससे तौबा करनी चाहिए, शैतान भी तावील में मारा गया, जब अल्लाह तआला ने फरमाया कि सज्दा करो तो उसने इन्कार किया और कहा ऐ अल्लाह तूने मुझे आग से बनाया और यह मिट्टी से बने हैं और आग ऊपर जाती है, मिट्टी नीचे जाती है, हम इनको कैसे सज्दा करें? इसका परिणाम क्या हुआ कि जन्नत से निकाला गया, पता चला कि तावील के बजाए तुरन्त माफी मांगनी चाहिए, माफी हज़रत आदम अ० की मीरास है अन्यथा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम भी कह सकते थे कि शैतान ने धोका दिया और मैंने धोके में आकर मम्नुआ दरख़्त (निषिद वृक्ष) से खा लिया, उन्होंने बात नहीं बनाई बल्कि कहा ऐ हमारे रब हमने अपने ऊपर जुल्म किया, अगर आपने हमें माफ न किया, और हम पर रहम न किया तो हम जरूर नुकसान उठाने वालों में होंगे, माफी मीरासे आदम है और तावील मीरासे इब्लीस है, अगर आदमी अपने आपको माफ करवाना चाहता है तो आदम की मीरास में आये, इब्लीस की मीरास में न जाये।

आज कल हम लोगों का हाल वही है जो हज़रत मुजद्दिद अलफे सानी रह० ने लिखा है कि शैतान एक जगह फुर्सत से बैठा हुआ था, तो किसी ने कहा क्यों मियाँ आज तो बड़े आराम से बैठे हो? तो शैतान ने कहा कि बहुत से लोगों ने हमारा काम ले लिया है, इसलिए थोड़ा आराम कर रहे हैं।

शेष पृष्ठ................34 पर

तबलीगे नबवी सल्ल० उसके उसूल और उसकी कामयाबी के असबाब

(हुजूर सल्ल० के धर्म प्रसारण के नियम और उनकी सफलता के कारण)

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी —अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह०

इस्लाम फैला और इस प्रकार फैला कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब दुन्या को छोड़ा तो पूरे अरब देश से मूर्ति पूजा समाप्त हो चुकी थी, इसलिए पहला प्रश्न यह पैदा होता है कि इसके कारण क्या थे? विरोधियों के समीप तो इसका जवाब सिर्फ तलवार है, लेकिन कार लायल (एक ईसाई लेखक) के कहने के मुताबिक़ निहत्ते और अकेले इस्लाम के हाथ में यह तलवार किस तलवार के ज़ोर से आई? परन्तु वास्तविक्ता यह है कि यह तलवार लोहे की नहीं केवल इस्लाम की तबलीगी हिकमत (नीति) की थी। इससे पूर्व की हम आगे बढ़ें, इस्लाम की इस ताकत की व्याख्या कर देना मुनासिब है।

फरीज़ये तबलीग़—

"तबलीग़" के लफ़्जी (शब्दिक) माने पैगाम पहुंचाने के हैं और परिभाषा में उसके माने यह हैं कि जिस चीज़ को हम अच्छा समझते हैं, उसकी अच्छाई और खूबी को दूसरे लोगों और दूसरी क़ौमों और मुल्कों तक पहुँचायें, और उनको इसके क़ुबूल करने की दावत दें।

कुर्आन पाक में तबलीग के हम मानी (पर्यायवाची) और शब्द भी हैं जिनमें से एक शब्द "इन्ज़ार" है जिसके माने होशियार और आगाह करने के हैं, दूसरा शब्द "दावत" है जिसके माने बुलाने और पुकारने के हैं, और तीसरा शब्द "तज़कीर" है जिसके मानी याद दिलाने और नसीहत करने के हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुन्या में नबी बना कर भेजे जाने के समय दो प्रकार के मज़हब थे, ईसाईयत, और बुद्ध मत, और यह दोनो ऐसे थे जो तबलीगी थे, दूसरे अधिकतर तबलीगी नहीं थे, जैसे, यहूदीयत, मजूसीयत, हिन्दुयीयत, जो दो तबलीगी समझे जाते थे उनकी निस्बत यह फैसला मशकूक (संदिग्ध) है कि क्या यह तबलीग उनके अस्ल (मूल) धर्म का आदेश था या बाद के अनुयायियों का अमल है? क्योंकि इनके धर्म ग्रंथों में इस उमूमी दावत की खुली हुई हिदायतें और उनके बानियों (संस्थापकों) की जिन्दगी में इसकी अमली मिसालें नहीं मिलतीं।

तमाम धर्म में केवल इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसने धर्म प्रचार के महत्व को समझा, और उसके मुतअल्लिक़ अपने सहीफे में खुले आदेश दिये, और उसके प्रचारक व हामिल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी जिन्दगी में उसकी अमली मिसालें पेश कीं जिन धर्मों ने तबलीग को अपना उसूल नहीं ठहराया, उनके ऐसा करने के मूल कारण दो हैं, एक यह कि उनके निकट इस हक़ के क़ुबूल करने की इज़्ज़त का अधिकार पैदाईश

से हासिल होता है, कोशिश से नहीं, दूसरा कारण यह है कि जो हक उनके पास है वह उनके निकट इतना पाक व पवित्र है कि उनकी खास पाक, पवित्र व सम्मानीय नस्ल व क़ौम के अतिरिक्त दूसरी तमाम कौमें जो नापाक व नजिस व घटिया हैं, उन तक अपने पवित्र धर्म को ले जाना खुद उस धर्म की पवित्रता को सदमा (आघात) पहुंचाना है।

यही कारण है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से एक बार जब एक कनआनी या यूनानी औरत ने उनसे बरकत चाही तो फरमाया "मैं इस्राईल के घर की खोई हुई भेड़ों के अलावा और किसी के पास नहीं भेजा गया" फिर फरमाया "मुनासिब नहीं कि लड़कों की रोटी (बनी इस्राईल की मजहब) कुत्तों (गैर इस्राईली क़ौमों) को फेंक दें" फिर फरमाया "गैर क़ौमों की ओर ना जाना और सामिरीयों के किसी शहर में दाखिल न होना बल्कि पहले इस्राईल की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ और चलते हुए मुनादी (एलान) करो" फिर इरशाद फरमाया "वह चीज़ जो पाक है कुत्तों को मत दो और अपने मोती सुअरों के आगे न फेंको"।

हिन्दुओं ने अपने धर्म को तमाम क़ौमों से छुपा कर रखा उसका भी यही कारण था कि वह अपना पवित्र धर्म मलिच्छों और अछूतों को सिखा कर उसको नापाक नहीं करना चाहते थे, यहूदियों का भी यही ख़्याल था कि ना मख़्तून (खतना रहित) इस नेमत के अह्ल (योग्य) नहीं।

तबलीग़ (धर्म प्रचार) का महत्व--

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुन्या की तमाम क़ौमों को बराबरी एवं समानता के एक स्तर पर ला खड़ा किया और खुदा के पैग़ाम के एलान का सबको बराबर का हक़दार करार दिया, इसलिए अपने धर्म प्रचार के लिए कुरैश और गैर कुरैश, हिजाज़ व यमन, अरब व गैर अरब, हिन्द और रूम, की कोई तख़सीस (विशेषता) नही फरमाई बल्कि दुन्या की हर क़ौम, हर भाषा और हर भाग में खुदाई पैग़ाम (ईश संदेश) का पहुँचाना फर्ज करार दिया।

शुरुआती "वही" में अंजानों को होशियार और बेखबरों को आगाह करने का सबसे पहला आदेश था अनुवादः ऐ चादर ओढ़ने वाले! उठ खड़े हो, और होशियार और आगाह करो (74:1,2), फिर बार बार आदेश होता रहा कि, अनुवादः जो कुछ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रब की ओर से आपकी ओर उतारा गया है उसको दूसरों को पहुँचा दीजिए (5:67) दूसरी जगह है "लोगों को दावत दीजिए और उसी प्रकार मज़बूती से जमे रहिए जैसे आपको आदेश दिया गया है" (42:15)। फिर फरमाया : "तो लोगों को नसीहत कीजिए अगर नसीहत उनको फायदा दे (87:9)। दूसरी जगह है "और नसीहत कीजिए कि नसीहत ईमान वालों को फायदा पहुचाती है (51:55) एक जगह फरमायाः "तो उसको कुर्आन के वास्ते से समझाइये जो मेरी वई़ीद (सजा देने का वादा) से डरता हो (50:45)।

शेष पृष्ठ..............27 पर

जिन्नात की बातें (पद्य)

—इदारा

कुर्आन में हाँ ज़िक्र है जिन्नात का मौजूद
अक्वाल में रसूल के जिन्नात हैं मौजूद
कुर्आन की हर बात पर ईमान है अपना
अक्वाल पर रसूल के ईमान है अपना
बिन देखे फरिश्तों पर ईमान है अपना
जिन्नात भी मख़्लूक़ हैं ईमान है अपना
अल्लाह ने जिन्नों को किया आग से पैदा
इन्सान को जैसे है किया ख़ाक से पैदा
मोमिन हुआ उनमें कोई काफिर रहा कोई
शक्ल उनको मिली ऐसी की आँखों से है छुपी
ईमान में इन्सान से हैं वह नहीं जुदा
आमाल में इन्सान से लेकिन हैं वह जुदा
इब्लीस भी इक जिन्न है शैतान भी हैं जिन्न
हैं खुश नसीब वह जो ईमान लाये जिन्न
औलाद है इब्लीस की शैतानों में शुमार
काफ़िर रहा जो जिन हुआ शैतानों में शुमार
इन्सान को बहकाने का इब्लीस का है काम
शैतान सारे करते हैं इब्लीस का यह काम
बस उनका पर चलता नहीं अल्लाह वालों पर
गो उनके दांव रहते हैं अल्लाह वालों पर
हड्डी व कोयले में छुपी उनकी है गिज़ा
कैसे वह उस से खाते हैं जाने यह बस खुदा
कैसे यह मान लें कि वह अमराज़ लाते हैं
इन्सान पर सवार हो वह कैसे आते हैं
गर इम्तिहाँ करें तो यह निकलेगा सारा झूठ
सारा बयान यह तो झूठों के हैं करतूत
करते हैं कैद जिन को दावा जो करते हैं
उनको जला कर क़त्ल का दावा जो करते हैं
यह सब फ़क़त फरेब है इसको न मानिए
साबित है जो किताब से सुन्नत से मानिए

जिन्नों को क़ैद करना मुम्किन नहीं जनाब
फिर उनको क़त्ल करना मुम्किन नहीं जनाब
अल्लाह के नबी ने अगर क़ैद था किया
वह मुअ़जिज़ा नबी का था अल्लाह का दिया
ईमान है नबियों के सभी मुजि़ज़ात पर
अल्लाह का सलाम हो नबियों की ज़ात पर
मेरी नज़र में कोई भी ऐसा अमल नहीं
जल जाये जिस से जिन या हों क़ैद व कहीं
जिन्नों के क़ैद का अमल आया कहाँ से है
उनका जलाने का अमल आया कहाँ से है
आयात में गर आया हो उसको बयाँ करें
आया हो गर हदीस में उसको अ़याँ करें
खिदमत में आमिलों की दरख़्वास्त है मेरी
सुनलें ज़रा कुछ ग़ौर से यह बात वह मेरी
आयात पढ़ कर दम करें तावीज भी लिखें
जिन को जलाया क़ैद किया झूठ ना गढ़ें
गर यह कहें इलाज है यह नफ़्सीयात से
अल्लाह की पनाह लें वह झूठ बात से
तुम को लगे बीमार पर जिन्नों का गर असर
माँगो दुआ़ अल्लाह से ज़ाइल हो वह असर
अल्लाह वाले गर दुआ़ उसके लिए करें
होगी मुफ़ीद उनकी दुआ़ यह यक़ीं करें
पर चाहिए इलाज में ग़फलत न हो रवा
कोई मरज़ ऐसा नहीं जिस की न हो दवा
लेकिन खुदा न चाहे तो होगा न फ़ाइदा
हम तो दुआ करें कि दवा से हो फाइदा
या रब हर एक मरीज को तू बख़्श दे शिफ़ा
और आमिलों के मक्र से हम सब को ले बचा
प्यारे नबी पे दिल से पढ़ो दोसतो दुरूद
लाखों सलाम व रहमतें उन पे हों या वदूद

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः क़ुर्आने पाक के नुजूल (अवतरण) का क्या मकसद (उद्देश्य) है? क्या कायनात (सृष्टि) और उसके असरार व रुमूज (भेद) मालूम करना भी उसके मकासिद (उद्देशों) में है?

उत्तरः नुजूले क़ुर्आन का मकसदे असली (वास्तविक उद्देश्य) हिदायते इन्सानी है (मानव उद्धार) है अल्लाह तआला ने कियामत तक आने वाले तमाम इन्सानों के लिए उसमें मुकम्मल रहनुमाई (सम्पूर्ण पथ प्रदर्शन) फरमा दी है जो भी इन्सान उसमें नबवी हिदायत (निर्देश) के मुताबिक गौर व फिक्र (चिन्तन) करेगा उसे हर पहलू से रहनुमाई और हिदायत हासिल होती रहेगी तख़लीके कायनात (सृष्टि रचना) उसके हकाइक (वास्तविकताएं) असरार और मकासिद पर गौर करना एक मोमिन के लिए मुफीद (लाभदायक) है मकसद नहीं। (अत्तफ़सीर व लमुफस्सिरून:24)

प्रश्नः कुछ लोग सुवाल करते हैं कि कुर्आन पाक में जिस तरतीब (क्रम) से सूरतें मौजूद हैं वह उस तरतीब से क्यों नहीं हैं जिस तरतीब से नाजिल हुईं (उतरीं) और यह तरतीब किसने दी और कब दी?

उत्तरः क़ुर्आन मजीद की आयतों और सूरतों को "वही" लिखने वाले सहा–बए–किराम ने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक लिखा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिस तरह फरमाया "वही" लिखने वालों ने उसी तरह तरतीब दी, यह किसी इन्सान की दी हुई तरतीब नहीं है अलबत्ता नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दौर में आयतें और सूरतें मुख्तलिफ (विभिन्न) चीजों पर लिखी हुई मुंतशिर (अलग–अलग) जगहों में थीं वह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के ज़माने में बाकाइदा एक मुसहफ (पुस्तक) में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयान की हुई तरतीब के मुताबिक जमा कर दी गई फिर हज़रत उस्मान के ज़माने खिलाफत में लुगते कुरैश (कुरैश की बोली) के मुताबिक़ जमा की गई जो मुस्तकिल (अस्थाई) मुसहफ की सूरत (रूप) में आज मौजूद हैं। (बुख़ारी हदीस नं0 4986,4987)

प्रश्नः क्या नुजूले क़ुर्आन के वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी ही में सूरतों के नाम मुकर्रर हो गए थे? सऊदी हुकूमत की तरफ से क़ुर्आन के जो नुस्खे (प्रतियाँ) छप रहे हैं उनमें कुछ सूरतों के नाम दूसरे हैं क्या यह सहीह है?

उत्तरः सूरतों के नाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद ही मुकर्रर फरमा दिये थे हदीस की किताबों में इसका बयान मौजूद है। हज़रत उस्मान रज़ि0 फरमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह मामूल था

कि जब कुर्आन करीम का कोई हिस्सा (भाग) नाजिल होता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम "वही" लिखने वाले से फरमाते कि इसे फुलाँ सूरह में फुलाँ आयत के बाद लिखा जाए। (फत्हुलबारी 9:52) सऊदी हुकूमत की तरफ से छपे हुए कुर्आन में जिन नामों का जिक्र किया है वह नाम नये नहीं हैं वास्तव में कुछ सूरतों के दो नाम हैं। सऊदी हुकूमत ने दोनों में से एक नाम छपवाया है जैसे सू–रए–बनी इस्राईल" का दूसरा नाम "इसरा" और सू–रए–मोमिन का दूसरा नाम "गाफिर" है इसलिए दोनों में से कोई एक नाम इस्तेमाल किया जा सकता है।

प्रश्नः क्या यह सहीह है कि हरकाते कुर्आन (जबर, जेर, पेश, जज़्म, मद आदि) हज्जाज बिन यूसुफ जैसे जालिम गवर्नर ने लगाए हैं?

उत्तरः हरकाते कुर्आन (उसके जबर, जेर, पेश मद आदि) के बारे में इखतिलाफ (मतभेद) है कुछ विद्वानों के अनुसार अबुल असवद दुवली ने यह काम अंजाम दिया और बाज विद्वान यह कहते हैं कि हज्जाज बिन यूसुफ ने यहया बिन योमर और नस्र बिन आसिम लैसी से यह काम लिया (उलूमुल कुर्आन, द्वारा मौलाना तकी उस्मानी पेज 194)

प्रश्नः कुर्आन में नुक्ते, जज्म और तशदीद आदि किसने लगवाये?

उत्तरः नुक्तों के बारे में मुअ़तबर (विश्वस्त) रिवायात के मुताबिक सबसे पहले यह कार्य अबुल असवद दुवली ने किया बाद में उसमें तरमीम (सुधार) हुई हमजा और तशदीद की अलामतें (चिन्ह) खलील बिन अहमद ने लगाईं अक्सर रुमूज व अवकाफ के चिन्ह सबसे पहले अल्लामा अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन तैफूर सजावन्दी ने लगाये (अलबुरहान फी उलूमिल कुर्आन 1:250)

प्रश्नः क्या कुर्आन में पहले से रुकूअ़, सज्दे और मंजिलें नहीं थी? अगर नहीं थीं तो यह किसने मुकर्रर किये?

उत्तरः सहा–बए–किराम आम तौर पर हफ़्ते में एक बार कुर्आन करीम खत्म करते थे उसके लिए उन्होंने रोजाना तिलावत की मिक्दार (मात्रा) मुकर्रर कर ली थी उसको हिज्ब या मंजिल कहा जाता है यह मंजिलें शुरुअ़ ही से राइज़ हैं, रुकूअ़ के सिलसिले में कोई मुसतनद (प्रमाणित) बात नहीं मिली है बाज़ उलमा का ख़्याल है कि रुकूअ़ की तअ़यीन (नियुक्ति) हज़रत उस्मान के जमाने में हो चुकी थी लेकिन उसकी कोई पक्की दलील नहीं मिलती है फतावा आ़लम गीरी में है कि मशाइख़ ने 540 रुकूअ़ किये हैं। (फतावा आलमगीरी 1/118)

प्रश्नः कुर्आन मजीद में सूरतों के शुरुअ़ में उनके नामों के साथ मक्की या मदनी लिखा होता है इसका क्या मतलब है?

उत्तरः मक्की सूरतें या आयतें वह हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मन्सबे नुबूवत पर फाइज होने के बाद से लेकर हिजरत तक यानी बारह साल पाँच महीना तेरह दिन में नाजिल हुईं, इन सूरतों के नामों के साथ मक्की लिखा जाता है। मदनी सूरतें वह हैं जो हिजरत

के बाद से लेकर वफात तक उतरीं, इन सूरतों के नामों के साथ मदनी लिखा जाता है यह पूरा जमाना नौ साल नौ महीने नौ दिन पर फैला हुआ है, गोया जो सूरतें हिजरत से पहले उतरीं वह मक्की कहलाती हैं, और जो हिजरत के बाद उतरीं वह मदनी कहलाती हैं। (अल–इतक़ान फी उलूमिल कुर्आन 1/191)

प्रश्नः— पूरा कुर्आन कब मुकम्मल हुआ? और नुजूल (उतरने) के एतिबार से सबसे आखरी आयत कौन सी है?

उत्तरः नुजूल कुर्आन की तकमील के बारे में राजेह़ (वरीयता प्राप्त) क़ौल यह है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात से नौ रोज पहले मुकम्मल हुआ, इब्ने अबी हातिम बयान करते हैं कि कुर्आन मजीद की जो सबसे आखरी आयत नाजिल हुई वह ''वत्तकू यौमनतुर–जऊन फीहि इलल्लाहि (आखिर आयत तक)'' नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस आयत के नुजूल के बाद नौ दिन बा हयात (जिन्दा) रहे फिर इस दुन्या से इन्तिकाल फरमा गये।

(मनाहिलुल इरफान 1/59)

प्रश्नः कुर्आन मजीद में सूरह तौबा के शुरुअ़ में बिस्मिल्लाह क्यों नहीं है?

उत्तरः सूरह तौबा के शुरुअ़ में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम न होने की वजह यह है कि उसके पहले जो सू–रए–अन्फाल है, उसी का यह एक हिस्सा है क्योंकि दोनों के वाकये एक जैसे हैं इस शुब्हे की बिना पर सू–रए–तौबा की इब्तिदा में बिस्मिल्लाह नहीं लिखी गई है।

(तिर्मिजी 3086)

प्रश्नः कुर्आन मजीद में बाज अहकाम (आदेश) सिर्फ एक दो बार आये हैं, उनकी जियादा अहमीयत (महत्व) है या उन अहकाम की जो बार बार आये हैं?

उत्तरः कुर्आन मजीद का एक एक हर्फ, एक एक आयत और तमाम अहकाम काबिले एहतिराम (आदर्णीय) और लाइके अज़मत हैं, और हर हुक्म की अपनी जगह अहमीयत है, अलबत्ता बाज अहकाम ऐसे होते हैं जिनको जहन व दिमाग़ में पैवस्त करने और बिठाने के लिए बार बार ज़िक्र की ज़रूरत पड़ती है खास तौर पर अक़ाइद व ईमानियात (विश्वास तथा आस्था) से मुतअ़ल्लिक अहकाम उसी मक़्सद से बार बार जिक्र किये गये हैं। (अलइत्तिफ़ाक़ फी उलूमिल कुर्आनः 1/72) अल्लामा जरकशी लिखते हैं कि कभी कभी बाज अहकाम की अजमत की बिना पर उनका बार बार जिक्र किया गया है।

प्रश्नः कुर्आन करीम के बोसीदा अवराक (फटे पुराने पन्नों) का क्या हुक्म है?

उत्तरः कुर्आन करीम के बोसीदा अवराक किसी पाक कपड़े में लपेट कर किसी महफूज़ जगह में जहाँ लोगों का आना जाना न हो वहां दफ़्न कर सकते हैं उसके दफ़्न करने का तरीका वही है जो मुसलमान मय्यित के दफ़्न करने का है, अगर बगली कब्र की शक्ल बना कर दफ़्न किया जाये तो बेहतर है ''दुर्रे मुख्तार 1/328'' में मुस्लिम मय्यित की तरह दफ़्न करने की सराहत मौजूद है।

प्रश्नः एक शख्स ने रिश्वत देकर सरकारी नौकरी हासिल की है, सुवाल यह है कि उसकी आमदनी दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः रिश्वत देना लेना गुनाह है लेकिन अगर नौकरी का काम जाइज है तो उस नौकरी की तनख्वाह भी जाइज है शुरु में अगर नौकरी के लिए रिश्वत दी है तो उसकी वजह से नौकरी की मेहनत का मुआवजा (बदला) न जाइज न होगा रिश्वत का गुनाह उसकी तनख्वाह को प्रभावित नहीं करता।

(फतावा हिन्दीयाः 4/41)

प्रश्नः गेस्ट हाउस किराये पर चलाना कैसा है जबकि कभी गेस्ट हाउस में ऐसे मर्द व औरत ठहर जाते हैं जो मियाँ बीवी नहीं होते मगर वह मियाँ बीवी बता कर ठहरते हैं। इसी प्रकार कुछ गेस्ट हाउस में शराब पीते हैं ऐसी सूरत में गेस्ट हाउस का किराया दुरुस्त होगा या नहीं?

उत्तरः गेस्ट हाउस में ठहरने का किराया लेना दुरुस्त है, इसकी कोशिस की जाये कि वहाँ बुराई न हो यह ऐलान किया जाये कि यहाँ शराब पीना मना है फिर भी अगर ठहरने वाले कभी बुराईयाँ कर बैठें तो उसका गुनाह गेस्ट हाउस के मालिक पर न होगा और उसका किराया नाजाइज न होगा।
अद्दुर्रुल मुख्तार अला रद्दुलमुहतारः9/37)

तबलीगे नबवी............

इसके अतिरिक्त बीसियों आयतों में इस फर्ज की महत्वता व्यक्त की गई है, हज़रत अली रज़ि0 से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "ऐ अली! तुम्हारी कोशिश से एक आदमी का भी दीने हक को कुबूल कर लेना दुन्या की बड़ी सी बड़ी दौलत से भी बढ़ कर है"

(मुस्लिम–बुख़ारी)।

इससे जियादा यह कि इस्लाम ने अपने हर मानने वाले पर भलाई की दावत (प्रचार), भलाई का हुक्म, बुराई से रोकना और आपस में एक दूसरे को सच्चाई की नसीहत करना अनिवार्य करार दिया है और मुसलमानों का यह फर्ज बताया है कि वह अपने साथ दूसरों को भी अंधेरे से निकालने का भरसक प्रयास करें।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश होता है कि हर प्रकार के खतरात से बेफिक्र हो कर प्यामे ईलाही लोगों तक पहुँचाइये और अगर ऐसा न किया तो रिसालत का फर्ज अंजाम नही दिया, अनुवादः ऐ रसूल! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रब की ओर से जो कुछ आप की ओर उतारा गया है उसको लोगों तक पहुंचा दीजिए, और अगर आपने ऐसा नहीं किया तो आपने उसका पैगाम नहीं पहुंचाया और अल्लाह आपको लोगों से महफूज़ रखेगा। (5:67)

...........जारी...........

नोटः कुर्आन मजीद की आयतों के जो हवाले दिये गये हैं उनमें पला नं0 सूरे का है और दूसरा आयत का।

दिल व ज़बान की हिफ़ाज़त

–मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

ज़बान दराज़ और कीना परवरी, बात बात पर लड़ाई झगड़ा करना खुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सख़्त ना पसन्द है और ऐसे शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़े सख़्त अलफाज फरमाये हैं, इस सिलसिले में लोगों में मुख़तलिफ़ किस्म के आदमी पाये जाते हैं।

1. बाज लोग गुस्सावर इतने होते हैं कि ज़रा ज़रा सी बात पर लड़ पड़ते हैं, और जो मुँह में आता है बकने लगते हैं और मद्दे मुकाबिल को तअ़न व तशनीअ़ का शिकार बनाते हैं, गाली गुलोज पर उतर आते हैं ऐसे शख़्स के मुतअल्लिक़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है "अपने भाई को गाली न दो, ऐसा न हो कि अल्लाह उस पर रहम कर दे और तुम को उसमें मुबतला कर दे" दूसरी जगह इरशाद है "लानत करने वाले कियामत में न किसी की सिफारिश कर सकेंगे और न किसी के गवाह बन सकेंगे" लिहाज़ा अगर किसी से कभी कोई ऐसा कल्मा निकल जाये जिससे दूसरे को तकलीफ पहुँचे तो उसके लिए दुआ़ करें और उससे मुआफी का ख़्वास्तगार हो।

2. बाज लोगों की आदत होती है कि वह गुस्से में आकर इन्सान तो इन्सान हैवान, हवा, दरख्त, जमाना, और उन जैसी क़िस्मों को गाली देने लगते हैं जो हद दर्जे मजहका ख़ेज़ है। हदीस शरीफ में आता है "रात व दिन, चाँद, सूरज और हवा को गाली न दो, इसलिए वह कुछ लोगों के लिए रहमत हैं और कुछ लोगों के लिए अजाब"।

3. बाज आदमी इतने बे बाक होते हैं कि वह जिन्दों को छोड़ कर मुर्दों को बुरा कहते हैं, यह कितनी बुजदिली की बात है कि जो जवाब न दे सके उनको गाली दी जाये, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "मरे हुए को बुरा मत कहो, इस लिए कि उन्होंने जो कुछ किया था पा लिया"। दूसरी जगह इरशाद है "अपने मुर्दा भाईयों की भलाइयों का जिक्र करो, उनकी बुराइयों से कतअ़ नजर करो"।

गरज इन्सान को अपने दिल व ज़बान की बे बाक़ी, कीना परवरी, गुस्ताख़ी, स्ख्त कलामी, दिल आजारी और फ़िस्क़ व कुफ्र के कल्मों से एह तियात करना चाहिए, किसी को जल्दी से गुमराह न कह देना चाहिए, फासिक व फाजिर कह देना बाज दफा वबाले जान बन जाता है, आखिर में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद सुनते चलिए "कोई आदमी किसी आदमी पर फिस्क या कुफ़्र की तुहमत न लगाये, अगर वह शख़्स जिस पर तुहमत लगाई गई उसका मुस्तहिक नहीं है तो वह तुहमत लगाने वाले पर लौट आती है।" ❑❑

सू-रए-.फ़ातिहा और कुछ अज़्कार

—इदारा

नमाज़ की हर रकअ़त में हम सू–रए–फ़ातिहा पढ़ते हैं फ़र्ज़ नमाज़ों की जहरी (आवाज़ से किराअ़त की जाने वाली) नमाज़ों में इमाम सू–रए–फ़ातिहा आवाज़ से पढ़ता है हम ध्यान से सुनते हैं हम को चाहिए कि हम जानें कि सू–रए–फ़ातिहा यानी ख़ुद अल्लाह तआला की सिखाई हुई इस दरख़्वास्त में हम अल्लाह तआला से क्या कहते हैं यहाँ सू–रए–फ़ातिहा का अनुवाद प्रस्तुत है:–

अस्ल तारीफ़ (वास्तविक प्रशंसा) केवल अल्लाह के लिए है, वह सारे आलमों (समस्त जगतों अर्थात सम्पूर्ण सृष्टि) का रब (पालनहार) है, रहमान व रहीम अर्थात बड़ा दयालू तथा महा कृपालू है। बदला दिये जाने वाले दिन (क़ियामत) का मालिक है। ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं (किसी और की नहीं) और तुझ ही से(गैबी) मदद मांगते हैं (किसी और से नहीं, भौतिक जगत में एक दूसरे से वैध सहयोग मांगना या सहयोग देना इससे अलग है) ऐ अल्लाह हम को सीधा रास्ता (सत्य मार्ग) दिखा वह मार्ग जिस पर चलने वालों को तू ने इनअ़ाम दिया पुरस्कृत किया, उन का रास्ता नहीं जिन पर चलने वालों पर तेरा प्रकोप हुआ न उन का रास्ता जो भटक गये। आमीन (ऐ अल्लाह मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर ले)।

नोट: ब्रेकटों के बीच की बात अनुवाद नहीं है अपितु अनुवाद समझाने के लिए बढ़ाई गई है।

फ़र्ज़ नमाज़ों के सलाम के बाद पढ़िये-

अल्लाहु अकबर, अस्तग़फ़िरुल्लाह, अस्तग़फ़िरुल्लाह, अस्तग़फ़िरुल्लाह, अल्लाहुम्मा अन्तस्सलामु व मिनकस्सलाम तबारक्त या ज़ल जलालि वल इकराम।

फिर पढ़ें सुबहानल्लाह 33 बार, अल्हम्दु लिल्लाह 33 बार, अल्लाहु अक्बर 34 बार, आयतुल कुर्सी एक बार, सू–रए–इख़्लास एक बार, सू–रए–फ़लक़ एक बार, सू–रए–अन्नास एक बार, यह सब अजकार हदीस की किताबों में मौजूद हैं, और भी बहुत से अजकार हैं यहाँ हमने आसानी के लिए थोड़े लिखे हैं जिसको जियादा पढ़ना हो जानकारों से मालूम करके पढ़े। हदीस में आता है कि फर्ज नमाज़ों के बाद दुआ कबूल होती है इसलिए दुआ भी खूब माँगें। □□

अकाइद मंजूम (इस्लामिक विश्वास पद्य में)

—मौलाना फ़त्ह मुहम्मद ताइब

खु़दा एक है दिल से जानो यक़ीं
सिवा उसके माबूद कोई नहीं
हर इक शै पे हाकिम है क़ादिर है वह
हर इक जा पे हाजिर है नाजिर है वह
उसी ने किया ख़ल्क़ हर ख़ैर व शर
नहीं फ़ेले बद से वह राज़ी मगर
फरिश्ते हैं नूरानी व बे गुनाह
वह जिब्रील लाते थे हुक्में इलाह
किताबें हैं जितनी खुदा की तमाम
वह सब ह़क़ हैं उन में नहीं कुछ कलाम
बुजुर्ग और ह़क़ गरचि हैं अंबिया
मगर सबके सरदार हैं मुस्तफा
मुहम्मद नबी साहबे मोजिज़ात
अलैहिस्सलाम व अलैहिस्सलात

दिया हक़ ने उनको वह क़ुर्आने पाक़
कि लारैब फीह जिस की है शान पाक
ख़लीफा भी तरतीब से चार हैं
वह हैं रहनुमा और सरदार हैं
अबू बक्र व फ़ारूक़ व उस्मा अ़ली
कि थे हम्दम व जा नशीने नबी
जो अस्हाब व औलाद व अज़्वाज हैं
वो हैं पेशवा और सरताज हैं
सुवाले नकीरैन है गोर में
उठे गा हर इक हश्र के शेर में
लिया जाएगा फिर हिसाब व किताब
बक़द्रे अमल है अ़जाब व सवाब
बजा औलिया की करामात है
नुजूमी की झूठी हर इक बात है

एक उर्दू शिअ़र (पद्य) का अर्थ

तूले ग़में ह़यात से घबरा न ऐ जिगर
ऐसी भी कोई शब है जिस की सह़र न हो

कठिन शब्द- तूल = लम्बा, ह़यात = जीवन, शब = रात, सह़र = सुबह, प्रभात, प्रातः

अर्थ- कवि जिगर मुरादाबादी कहते हैं कि ऐ जिगर! जीवन के लम्बे दुख से आप घबराएं नहीं, यह दुख एक दिन समाप्त हो कर रहेगा, फिर उदाहरण देते हुए स्वयं को समझाते हैं कि क्या कोई ऐसी भी रात है जिस की सुब्ह न हो? जिस प्रकार हर अंधेरी रात समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार हर दुख का अन्त होता है और सुख की प्रातः आती है।

जिगर महोदय ने इस पद्य में हर दुख़्यारे को सांत्वना दी है और उसे सुख के दिन आने की शुभ सूचना दे कर दुख झेल लेने का साहस प्रदान किया है और उसे निराश होने से बचाया है।

बेल और पुदीने के लाभ

—सम्पादक

बेल: बेल मशहूर फल है उसका बड़ा पेड़ होता है जब तक बेल कच्चा रहता है उसका रंग हरा रहता है लेकिन जब पक जाता है तो वह पीला हो जाता है उसके अन्दर पीले रंग का गूदा भरा होता है जो मज़े में मीठा और हीक दार होता है और उसमे ख़ास क़िस्म की खुशबू आती है कच्चे और अध पक्के फलों के गूदे को ख़ुश्क करके दवाओं में बेलग्रीन के नाम से इस्तेमाल करते हैं।

पकी हुई बेल के गूदे में गिज़ाइयत होती है मेदा, ज़िगर और आंतों को ताक़त देता है और मुफ़र्रेह भी, मेदे और आंतों की कमज़ोरी से दस्त आते हों या पेचिश की शिकायत हो तो बेल उनको दूर करने की बड़ी तासीर रखता है उसके खाने से मेदे और आंतों को कुव्वत हासिल होती है। पाख़ाना बंध कर आने लगता है और इस तरह से आने वाले दस्त और पेचिश की शिकायत दूर हो जाती है। गर्मियों में बेल का शरबत बना कर पीते हैं। चुनांचि पकी हुई बेल का गूदा पानी में मिला कर थोड़ी सी मिसरी या चीनी मिला कर (या इन के बगैर) पीने से गर्मी और प्यास को आराम मिलता है और अगर दस्त आते हों तो वह बन्द हो जाते हैं। बाज़ लोग दस्तों और पेचिशों को रोकने के लिए इसे इस तरह इस्तेमाल करते हैं कि गद्दर बेल लेकर उस पर चिकनी मिट्टी लगा कर आग में दबा देते हैं। जब ऊपर की मिट्टी पक जाती है तो बेल को आग से निकाल कर उसका गूदा दो तीन तोले नहार मुँ खाते हैं। इस तरह चंद रोज़ बराबर खाने से दस्त रुक जाते हैं। पेचिश और आँव की तकलीफ़ दूर हो जाती है।

कच्ची बेल के गूदे में दस्तों को रोकने की तासीर जियादा क़वी होती है बेलग्री तीन माशे, ज़ीरा सफैद और छोटी इलाइची हर एक एक माशे को पानी में पीस छान कर पिलाने से छोटे बच्चों के दस्त बन्द हो जाते हैं।

अगर आँखें दुखती हों और उनसे कीच निकलती हो तो बेल के पत्ते पीस कर लेप लगाने स आँखें अच्छी हो जाती हैं।

पुदीना: पुदीना मशहूर ख़ुशबूदार चीज़ है, कसबों और दीहात में सब जगह मिलता है, आमतौर पर इसको खुशबू के लिए सालन में डालते हैं, खुशबूदार होने के अलावा यह खाने को हज्म करता है मेदे (आमाशय) को ताक़त देता है और गैस को निकालता है, इसलिए उसकी चटनी बना कर खाने के साथ खाते हैं, उसमें जहरों (विषों) को दूर करने की तासीर भी है, इसलिए कुछ जहरों को दूर करने के लिए भी इस्तेमाल करते हैं अतः तुखमा (बद हज्मी) और हैजा में पुदीना 6 ग्राम और इलायची

3 ग्राम 500 ग्राम पानी में उबाल कर छान कर बार बार पिलाने से मतली और क़ै बन्द हो जाती है, पेट का दर्द भी दूर हो जाता है और प्यास कम हो जाती है।

भीलपा (जिसमें पिण्डलियों की रगें फूल कर मोटी हो जाती हैं) में 6 ग्राम पुदीना को पीस छान कर माउल जुब्न (दूध को फाड़ कर निकाला हुआ पानी) 100 ग्राम के साथ कुछ दिनों तक बराबर इस्तेमाल करते रहने से इस मरज में कमी आ जाती है। पुदीना को शराब में पीस कर लगाने से चेहरे के दाग धब्बे दूर हो जाते हैं और झाइयाँ दूर हो जाती हैं और कुछ लोगों के आँख के नीचे जो काला हल्का (घेरा) पैदा हो जाता है वह भी उसके बराबर लगाते रहने से मिट जाता है। शराब नजिस है मजबूरी में इस्तेमाल करें तो नमाज़ से पहले चेहरा पाक कर लें। (सम्पादक)

बिल्ली, नेवले और चूहे ने काट लिया हो या भिड़, बिच्छू ने डंक मारा हो तो पुदीना पीस कर लगाने से आराम हो जाता है।

हरे पुदीना का पानी निकाल कर टपकाने से नाक, कान और दूसरे आजा के जख़्मों के कीड़े मर जाते हैं।

पुदीना पित्ती में भी लाभ देता है हरा पुदीना 10 ग्राम और सूखा हो तो 5 ग्राम लाल शकर 20 ग्राम, पानी में उबाल कर पिलाने से मरज दूर हो जाता है बाज हकीम पित्ती में हरे पुदीना का पानी 10 ग्राम, गुलाब का अ़रक़ 500 ग्राम, सिकंजबीन सादा (लीमू का अरक और शकर) 10 ग्राम तीनों को मिलाकर पिलाते हैं, तीन चार खुराक पिलाने से पित्ती जाती रहती है। (तीन तीन घण्टों के अंतर से पिलाना चाहिए)

(हमदर्द की पुस्तक "दीहाती मुआलिज" से ग्रहीत)

माहे मुबारक आ गया

चाँद मतलअ़ पर नज़र में आ गया
शोर है माहे मुबारक आ गया
आ गया माहे मुबारक आ गया
फ़ज़्ले रब से माहे बरकत आ गया
अब तरावीह सब पढ़ेंगे शौक़ से
माहे कुर्आनो तिलावत आ गया
लुत्फ़े इफ़्तारी व सहरी को लिये
माहे बरकत माहे रहमत आ गया
रात जो बेहतर है दस सौ माह से
ले के रमज़ाने मुबारक आ गया
हों नमाज़ें सब जमाअत से अदा
अम्रे रब, कैदे शयातीं, आ गया
रोज़ा रखो और तिलावत भी करो
अज्र अब सत्तर गुना का हो गया
रहमतें लाखों नबी पर और सलाम
आसी बन्दा, उन से ईमां, पा गया

धरातल के विचार से भारत के पांच खण्ड

1. उत्तरी पर्वतीय खण्ड– उत्तरी सीमा के साथ–साथ हिमालय की अत्यन्त ऊँची श्रेणियाँ तथा हिम से ढकी चोटियाँ हैं। इसकी तीन समानान्तर श्रेणियाँ हैं– हिमाद्रि, हिमाचल और शिवालिक। हिमाद्रि हिमालय की सबसे ऊँची श्रेणी है। इसमें संसार की सर्वोच्च चोटिया हैं। संसार का सर्वोच्य शिखर, एवरेस्ट शिखर (8,848 मीटर) इस श्रेणी में ही है। इस श्रेणी पर वर्ष भर बर्फ जमी रहती है। इससे नित्य बहने वाली अनेक नदियां निकलती हैं। हिमाचल श्रेणी में मसूरी, शिमला, श्रीनगर, डल्हौजी, नैनीताल, अलमोड़ा, कुल्लू, दार्जिलिंग इत्यादि अनेक स्वास्थ्यप्रद पहाड़ी नगर स्थित हैं। पश्चिम में उनके बीच कुछ दूरी हो जाने से कश्मीर की रमणीक घाटी बन गई है।

2. सतलुज–गंगा का मैदान– यह सतलुज, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र नदियों की अति उपजाऊ मिट्टी का बना प्रदेश है। यह समतल मैदान संसार का बहुत ही विस्तृत तथा उपजाऊ मैदान है। यह भारत के लिए अन्न भण्डार होने के अतिरिक्त कई उद्योगों को कच्चा माल भी प्रदान करता है। सतलुज नदी ब्यास, और फिर पाकिस्तान में रावी, चेनाब, झेलम नदियों का पानी लेकरसिन्धु नदी में जा मिलती है। सिन्धु नदी पाकिस्तान में कराची के निकट अरब सागर में गिरती है। गंगा में बाईं ओर से गोमती, घाघरा, मण्डक और कोसी नदियाँ मिल जाती हैं और दाहिनी ओर से यमुना (चम्बल, बेतवा सहित) और केन, सोन आदि नदियाँ मिलती हैं। बंगाल पहुंच कर यह नदी बहुत बड़ा डेल्टा बना कर बंगाल की खाड़ी में जा गिरती है। ब्रह्मपुत्र नदी तिब्बत में से बहती हुई भारत के पूर्वी भाग में अरुणाचल प्रदेश और असम में बहती है और फिर बांग्लादेश में गंगा नदी के डेल्टे में मिल जाती है।

3. भारतीय महामरुस्थल– उत्तर भारत के मैदान के दक्षिण–पश्चिम में अरावली की पहाड़ियों से चलकर पाकिस्तान की सीमा तक प्रदेश रेतीला है। इसे भारतीय महामरुस्थल कहते हैं। कहीं–कहीं छोटी पहाड़ियां भी हैं। यहां अक्सर आंधियां आती रहती हैं जो रेत के टीलों को उड़ा कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा ढेर करती हैं। इसके दक्षिणी भाग में लूनी नदी है। शेष भाग में कुछ छोटी नदियां रेत में विलीन हो जाती हैं। इस प्रकार यह स्थलीय जल निकास का प्रदेश है। साँभर झील खारे पानी की सबसे बड़ी झील है।

4. दक्षिण का पठार– दक्षिण भारत का एक बड़ा पठार है। इसके उत्तर पश्चिम में अरावली पर्वत, मालवा पठार, विन्ध्याचल और सतपुड़ा पर्वत तथा उत्तर पूर्व में छोटा नागपुर का पठार है। पश्चिम की ओर ऊँचा पश्चिमी घाट है। और पूर्व की ओर पूर्वी घाट की कम ऊँची पहाड़ियाँ हैं। दक्षिण में नीलगिरि की पहाड़ियाँ भी हैं। दक्षिण पठार के उत्तरी

भाग का ढाल पश्चिम को अरब सागर की ओर है और शेष भाग का ढाल पूर्व को बंगाल की खाड़ी की ओर है। नर्मदा और तापी नदियाँ अरब सागर में गिरती हैं। महा नदी, गोदावरी, कृष्णा, पेन्नेरू तथा कावेरी नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। यह खण्ड खनिजों का विशाल भण्डार है। यह भाग कपास तथा ज्वार–बाजरा जैसे अनाजों का बड़ा उत्पादक है।

5. **तट के मैदान**- पूर्वी तथा पश्चिमी घाटों के साथ समुद्र तट के मैदान हैं। पश्चिमी तट का मैदान कम चौड़ा है, इसमें कोई बड़ी नदी नहीं है, परन्तु पूर्वी तट का मैदान अधिक चौड़ा है और उसमें महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के डेल्टे हैं। पश्चिमी तट के मैदान में तीव्रगति वाली अनेक छोटी– छोटी नदियाँ हैं जो पश्चिमी घाट से उतरते समय झरने बनाती हैं। पूर्वी तटीय मैदान में चावल की उपज अच्छी होती है। पश्चिमी तटीय मैदान मसालों, नारियल, कहवा तथा रबड़ की खेती के लिए प्रसिद्ध है। ❑❑

इख़्लास और उसके............

अल्लाह तआला को यह बात पसंद है कि उसके दरबार में तौबा करो, है कोई जो गुनहगार न हो, अल्लाह तआला फरमाता है मुझ से मग्फिरत मांगो तुम्हारी मग्फिरत करूंगा, हिदायत चाहो, हिदायत दूंगा, इसी लिए बताया गया कि कोई भी अपने को दूध का धुला न समझे।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसकी नियत दुन्या की होती है तो अल्लाह तआला निर्धनता और मुहताजी का डर उसके सामने खड़ा कर देते हैं और वह हर समय जायदाद (संपत्ति), कारोबार और दूसरी चीज़ों में परेशान रहता है और सब बिखरा रहता है, और जिसकी नियत आखिरत की होगी तो अल्लाह तआला उसको दिल का दौलतमंद कर देगा, और अस्ल गिना और दौलतमंदी तो दिल की दौलतमंदी है जब वह हासिल होगी तो हर चीज़ ढर्रे पर पड़ जायेगी।

जब अल्लाह राज़ी हो जायेगा तो दुन्या ज़लील व रुसवा हो कर इंसान के पास आयेगी, अगर आखिरत सामने रहे तो दुन्या उसके जूतों में आती है।

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह0 का वाक़्या लिखा है कि एक साहब हदया देने आये, आपने लेने से इंकार किया, तो उन्होंने आपसे फिर आग्रह किया, आपने कहा नहीं लेंगे, जब वह जाने लगे तो हज़रत के जूते के अन्दर रख गये, जब मौलाना निकले और जूता पहना तो पैसे पैर में लगे, तो मुस्कुरा कर कहने लगे देखो दुन्या आती है जूतों में, मैंने उसको ठोकर मार दी तो जूते के अंदर आ गयी, जो दुन्या से भागता है तो दुन्या उसके पीछे आती है और जो दुन्या के पीछे दौड़ता है दुन्या उससे भागती है, अजीब व गरीब है यह दुन्या, उसकी खुशामद करोगे तो नखरे करेगी, और अगर ठोकर मारोगे तो तुम्हारी खुशामद करेगी, इसमें आदमी को धोका हो जाता है।

............जारी.........

इस्लाम में विवाह

—इदारा

इस जगत में हर मनुष्य की तीन मौलिक आवश्यकताएं हैं, खाना, रहना तथा सन्तान पैदा करना, खाने में जीविका उपार्जन की समस्त बातें आ जाती हैं, खेती करना, व्यपार करना, नौकरी करना आदि, क्या खाएं और उसे कैसे प्राप्त करें हलाल, हराम (वैध, अवैध) सब का सम्बन्ध इसी से है, रहना में कहाँ रहें क्या पहने, इन सब चीजों में जिन जिन चीज़ों की आवश्यकता हो सब की प्राप्ति से सम्बन्धित बातें इस में आती हैं। सन्तानोत्पत्ति की आवश्यकता हर जीव धारी में प्राकृतिक है और विधाता ने उसकी व्यवस्था इस प्रकार की है कि हर जीव में संयोग स्वाद द्वारा प्रबल काम इच्छा रख दी है जिसकी पूर्ति तथा प्राप्ति के लिए हर जीव अन्तिम सीमा तक चेष्ठा करता है। परन्तु मनुष्यों ने मालिक की दी हुई बुद्धि से अपने समाज को शान्ति मय रखने के लिए विवाह की व्यवस्था की और उसके नियम बनाए।

इस्लाम ने आखिरत की ज़िन्दगी (पारलौकिक जीवन) को मूल बताते हुए मनुष्य की इन तीनों मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति की व्यवस्था उत्तम तथा उच्चतम ढंग से की है। इन पंक्तियों में हम तीसरी मौलिक आवश्यकता के उत्तम साधन विवाह पर कुछ लिखेंगे।

इस्लाम ने इस प्राकृतिक आनन्दित काम इच्छा को रोक कर सन्यास का आदेश नहीं दिया है कि यह तो मानव हत्या का साधन है और यदि समस्त मानव इसी वृत्ति के हो जाएं तो थोड़े ही दिनों में यह धरती आदम की सन्तान से खाली हो जाए परन्तु यह भी स्मरणीय है कि समस्त मानव इस वृत्ति के हो नहीं सकते इसलिए कि विधाता चाहता है कि मानव जगत बाकी रहे अतः उसने इसकी व्यवस्था इस प्रकार की—

ऐ मनुष्यो! वह (विधाता) वही है जिसने तुमको (अर्थात दादा आदम को) एक जीव से जीवन दिया और उसी एक जीवधारी (आदम) से उसकी पत्नी (दादी हव्वा) को बनाया ताकि उसकी ओर प्रवृत्ति हो कर शान्ति प्राप्त करे। (अअ्राफ़: 189)

और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारी ही जिंस (जाति) से पत्नियाँ बनाईं ताकि तुम उनसे आनन्द प्राप्त करो और तुम्हारे बीच प्रेम तथा करुणा का भाव उत्पन्न कर दिया, इसमें सोच विचार करने वालों के लिए (विधाता को पहचानने की) निशानियाँ हैं। (रूम:20)

तात्पर्य यह है कि पुरुष की काम प्रवृत्ति स्त्री की ओर तथा स्त्री की काम प्रवृत्ति पुरुष की ओर होना स्वाभाविक है। इस्लाम ने इसको रोका नहीं अपितु इसकी पुष्टि की है, अलबत्ता इसको नियमित करके समाज को स्वक्ष, पवित्र तथा शांतिमय बना दिया क्यों न हो "क्या (मानव प्रवृत्ति को) वह न जानेगा जिसने उसको अस्तित्व दिया"। (67:14)

मनुष्य की काम इच्छा की पूर्ति तथा संतानोत्पत्ति के लिए इस्लाम ने निकाह का प्रतिबन्ध लगाया, ऐसा नहीं कि पशुओं की भाँति जिस स्त्री से जहाँ चाहा जब चाहा सम्बन्ध स्थापित कर लिया। निकाह के विस्तृत नियम बताये—

(निकाह़ के लिए) हराम (अवैध) की गई तुम पर तुम्हारी माएं, तुम्हारी बेटियाँ, बहनें, फूफियाँ, ख़ालाएं (मौसियाँ), भाई की बेटियाँ (भतीजियाँ, बहन की बेटियाँ (भाँजियाँ) वह स्त्रियाँ जिनका तुमने दूध पिया (दूध के सम्बन्ध की माताएं) तथा उनकी बेटियाँ (दूध में सम्मिलित बहनें) पत्नियों की माताएं (सास) तुम्हारी पत्नियों की वह बेटियाँ जो तुमसे पहले वाले पति से लेकर आई हों जब कि तुमने निकाह़ के पश्चात उन पत्नियों से सहवास कर लिया हो परन्तु यदि केवल निकाह़ हुआ हो और तुमने उनसे सहवास न किया हो कि अलगाव हो गया हो तो उनकी पूर्व पति से लाई बेटियां ह़राम नहीं हैं। तुम्हारी पीठ से पैदा तुम्हारे बेटों की बीवियाँ भी तुम पर ह़राम हैं। दो बहनों का एक साथ पत्नी बनाना भी ह़राम है। अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला बड़ा दयालू है। (अन्निसाः 23)

यहाँ जिन स्त्रियों को ह़राम कहा गया है उनकी बेटियाँ, बेटियों की बेटियाँ अर्थात नवासियाँ आदि भी ह़राम हैं। अगली आयत में बताया कि जो स्त्रियाँ किसी के निकाह़ में हैं वह भी हराम हैं। ह़राम होने का अर्थ यह है कि उनसे निकाह़ वर्जित है।

इस्लाम ने स्वतंत्र काम वासना पर सम्पूर्ण नियंत्रण किया है आदेश दिया "व्यभिचार के निकट भी न जाओ" (बनी इस्राईल) तथा स्वतंत्र कामी व्यभिचारी के लिए इतना कठोर दण्ड रखा है कि कोई स्वतंत्र संभोग की कल्पना भी न कर सके।

इस्लामिक विधान अपनी सृष्टि से पूर्णतया परिचित विधाता का बनाया हुआ है अतः अपने बन्दों को स्वतंत्र काम वासना से बचाव के लिए पर्दा अनिवार्य किया और अपने नबी को आदेश दिया कि "ईमान वालों से कह दीजिए कि वह अपनी निगाहों को बचा कर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें, यह उनके लिए अधिक अच्छी बात है, अल्लाह को उस सबकी पूरी खबर रहती है जिसको वह किया करते हैं।

(अन्नूरः 30)

ईमान वालियों से कह दीजिए कि वह अपनी निगाहें नीची रखें (अकारण पुरुषों को न घूरें) अपने गुप्तांगों की रक्षा करें (व्यभिचार से दूर रहें) अपने श्रृंगार को छुपाएं सिवाए इसके जो स्वतः दिख जाए अपने सीनों को ओढ़नियों से ढांके रखें, अपनी शोभा न दिखाएं सिवाए अपने पति के या अपने पिता के या पति के पिता (ससुर) के, या अपने बेटों के या अपने पति के बेटों (सौतेले बेटों) के या अपने भाइयों के या भाई के बेटों (भतीजों) के या बहन के बेटों (भांजों) के या अपनी जैसी स्त्रियों के या अपनी बांदियों के, या ऐसे सेवकों के जिन में काम इच्छा ना (रह गई) हो या उन बालकों के जो अभी स्त्रियों के गुप्तांगों (से

आनन्दित होने) से अवगत न हों (इन सबके अतिरिक्त किसी के समक्ष अपनी शोभा प्रकट ना करें) और (गहने पहने) पैरों को (धरती) पर धमक कर न रखें कि जिससे छुपी वस्तु जान ली जाए (कि कोई युवती चल रही है) और तुम सब अल्लाह से (अपनी भूल चूक पर) क्षमा मांगो ताकि सफल हो जाओ। (अन्नूर 31)

पुरुष तथा स्त्री के वह सम्बन्ध (रिश्ते) जिनके कारण परस्पर पर्दा नहीं, ना ही उनमें निकाह का सम्बन्ध हो सकता है इस नाते वाले परस्पर "महरम" कहलाते हैं, यह "महरम" एक परिभाषा है जिसका अर्थ है वह जिससे पर्दा नहीं ना ही उससे कभी निकाह हो सकता है। इन में पति भी आता है जो पहले महरम न था (अर्थात ना महरम था) परन्तु निकाह से उसकी परिस्थिति बदल गई। पत्नी के साथ उसकी बहन को जो निकाह में एकत्र करने से रोका गया है तो पत्नी की बहन (साली) भी महरम नहीं है, इसी प्रकार पत्नी की माँ के अतिरिक्त उसकी फूफी, मौसी आदि भी महरम नहीं हैं। इसलिए कि पत्नी की मृत्यु पर उसकी बहन या फूफी या मौसी से निकाह वैध है। परन्तु उसकी दादी नानी महरम हैं।

जिन स्त्रियों से निकाह बताया गया है सभी लोग उसका पूरा ध्यान रखते हैं परन्तु दुःख होता है देख कर कि जिनसे पर्दे का आदेश दिया गया अधिकांश लोग उनसे पर्दा नहीं करते जब कि नामहरमों से पर्दा न करने की गिन्ती बड़े पापों में है। जिन लोगों ने आदत से या किसी और विवशता से पर्दे को छोड़ रखा है उनको चाहिए कि कम से कम इतना तो करें कि नामह़रम के सामने स्त्री अपना पूरा शरीर ढके, बालों को इस प्रकार ओढ़नी या स्कार्फ़ से बन्द करे कि एक बाल भी न दिखे फिर आवश्यकता है तो गट्टी पर से दोनों हाथ तथा मुखड़ा खोल सकती हैं, परन्तु कोई स्त्री किसी नामह़रम पुरुष के साथ एकान्त में न हो यहाँ यह याद रहे कि अंवेषणात्मक बात (तह़कीकी बात) यही है कि मुखड़े का भी पर्दा है परन्तु पर्दा न करने वाले उक्त पर्दा कर लें तो आशा है उनको क्षमा मिल जाएगी।

निकाह़ एक इबादत (उपासना) है, अल्लाह तआ़ला ने आदेश दिया "तुम (नामह़रमों में से) अपनी रुचि की स्त्रियों से निकाह़ कर लो (आवश्यक-तानुसार) दो से या तीन से या चार से (चार से अधिक नहीं, और उनमें (शरई़) न्याय अनिवार्य होगा) परन्तु यदि तुमको भय हो कि (शरई़) न्याय न कर सकोगे तो केवल एक से निकाह़ करो।

(अन्निसाः 3)

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवानों को सम्बोधित करते हुए आदेश दिया "ऐ युवा जनों! तुममें से जो पौरुषेय शक्ति (मर्दाना कुव्वत) रखता हो उसको चाहिए कि वह निकाह करे कि निकाह निगाह़ की सुरक्षा करता है तथा गुप्तांगों को (व्यभिचार पाप) से बचाता है। (बुख़ारी)

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूचित किया कि "निकाह़ मेरी सुन्नत

(पद्धति) है जो मेरी सुन्नत से विमुख हुआ वह मेरा नहीं रहा। (तिर्मिज़ी) और सूचित किया कि जब बन्दे ने निकाह़ कर लिया तो निःसन्देह उसने आधा दीन पूरा कर लिया अब वह शेष आधे में अल्लाह से डरे (अर्थात अल्लाह की अवज्ञा से बचे) (मुस्लिम)।

जब निकाह एक इबादत (उपासना) है तो जिस प्रकार वुजू में, नमाज़ में, रोज़े में, ज़कात देने में, ह़ज करने में हम को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जैसे इन इबादतों के करने की विधि बताई है उसी ढंग से करते हैं, ऐसे ही निकाह़ में हमको अपनी ओर से कुछ न मिलाना चाहिए।

निकाह में पहली बात लड़की लड़के का चयन है इस सिलसिले में लोग बड़ी भूल करते हैं।

अबू ह़ातिम मुज़नी से रिवायत है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कोई शख़्स (तुम्हारी अ़जीज़ा को) पैग़ाम दे और तुम उसके दीन व अख़लाक़ से मुतमइन (सन्तुष्ट) हो तो उससे (अपनी अ़ज़ीज़ा का) निकाह कर दो अगर ऐसा नहीं करोगे तो ज़मीन पर बड़ा फ़ित्ना व फ़साद (उपद्रव) पैदा होगा। सह़ाबा ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर उसमें कुछ हो (अर्थात दूसरी हैसीयत से कुछ कमी हो? अर्थात ग़रीब हो, रूपवान न हो आदि) फ़रमाया अगर वह आया और दीन व अख़्लाक़ में वह तुमको पसन्द है तो उससे निकाह़ कर दो, तीन बार ऐसा ही कहा।

(तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

तातपर्य यह है कि तुमने दीनदार और अच्छे स्वभाव का लड़का पाते हुए उसकी ग़रीबी के सबब उससे निकाह़ न करोगे तो एक तो समाज में यह सन्देश जाएगा कि निर्धन से निकाह़ न करना चाहिए, इस प्रकार जवान लड़कियों और जवान लड़कों की शादी में जब अधिक देर होगी तो निःसन्देह समाज में उपद्रव होगा। अतः लड़के के चयन में आयु की समानता, माता पिता के शुद्ध होने की समानता जैसी सभी आवश्यक बातों को भली भांति देखना चाहिए परन्तु प्राथमिकता दीन तथा सचरित्रता (हुस्ने अख़लाक़) को देना चाहिए, दीनदारी के मुक़ाबले में दूसरी कमियों को सम्भव हो तो नज़र अन्दाज़ कर देना चाहिए और याद रखना चाहिए कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि0 धनवान मुहाजिर कुरैशी ने अपनी बहन का निकाह़ बिलाल ह़बशी रज़ि0 से कर दिया था। परन्तु इस विषय में लड़की की रज़ामन्दी आवश्यक है।

यही नियम लड़की के चयन में अपनाना चाहिए अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

स्त्रियों से केवल उनका रूप तथा सुन्दरता देख कर उनसे निकाह मत करो, सम्भव है (दीन न होने के कारण) उनका रूप उनको किसी बुराई की ओर लौटा दे। केवल उनका धन देख कर भी उनसे निकाह़ मत करो सम्भव है (दीन न होने के कारण) उनका धन उनको (हानि पहुंचाने वाला) घमंडी बना दे अपितु निकाह़ करो

दीनदार स्त्री से (चाहे वह गोरी हो, अथवा काली, चाहे निर्धन अथवा धनवान) कि एक काली दीनदार दासी उत्तम है दीन रहित सुन्दरी से। (इब्ने माजा किताबुन्निकाह़)

वास्तव में लड़की के जोड़ों के चयन करने में लड़की के घर वाले अपनी जिम्मेदारी समझते हैं इसका रिवाज बहुत बाद में विशेष कर उप महाद्वीप (भारत, पाक, बंगला देश आदि) में हिन्दू भाइयों की संगत से हुआ और इसी के साथ सगाई, महूरत आदि का चलन आया। हिन्दू भाइयों के यहाँ आज भी पंडित से महूरत निकलवा कर ही विवाह होता है। हमारे बहुत से मुस्लिम भाइयों ने भी इस कार्य को अपनाया और पंडित को बुलाने के बजाए मौलवी जी को बुला कर या स्वयं ही अपने ख़्याल से जंत्री की सहायता से, नहस से बच कर सअ़द (शुभ) दिन तारीख़ रखने लगे आगे चल कर सअ़द व नहस को त्यागा तो अपनी सुहूलत का लिहाज़ किया परन्तु तारीख़ रखने की प्रथा चलती रही यही मंगनी है जिसने अब वलीमे (निकाह़ भोज) का रूप धारण कर लिया है।

निकाह का वास्तविक रूप क्या था? सुनिए— ह़ज़रत अ़ली रज़ि0 स्वयं शर्माते हुए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत फ़ातिमा की मांग करते हैं और कुछ सुवाल व जवाब के पश्चात रिश्ता तै हो जाता है, न नाई न्योता ले जाता है न कार्ड लिखा जाता है दो चार मुहाजिरीन व अन्सार बुलाए जाते हैं और निकाह़ करके शाम को एक शिष्ट स्त्री उम्मे ऐमन के संग दोनों जहाँ के बादशाह की बेटी बिदा कर दी जाती हैं। ज़रा पता लगाइऐ हज़रत अबू बक्र ने अपनी लाडली आ़इशा का निकाह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किस तरह किया? आप अह़ादीस की किताबों में सहा—बए— किराम के निकाह़ के वाकिआ़त ढूँढ निकालिए, जब लड़का जवान हुआ, उसको जीवन साथी की आवश्यकता हुई उसने किसी युवती के बाप या उसके वैध वली (अभिभावक) से लड़की की मांग कर ली, लड़की के वली को पैग़ाम देने वाला (मांग करने वाला) ठीक लगा तो उसने स्वीकृत दे दी निकाह़ हो गया, रुख़सती हो गई। सरलता के साथ वलीमा हो गया। कभी ऐसा भी हुआ कि लड़की या लड़की के घर वालों ने लड़के को पैग़ाम कहलाया और दोनों ओर की रज़ामन्दी से निकाह़ हो गया।

एक बात यहाँ वर्णनीय है कि सहाबा रज़ि0 में नाबालिग़ लड़की के निकाह के उदाहरण तो बहुत से मिल जाएंगे परन्तु नाबालिग़ लड़कों के निकाह प्रथम काल में ढूँढे से भी न मिलेंगे। यह बाल विवाह की प्रथा भारत ही की है या उप महाद्वीप की। यह नहीं कि बाप अपने लड़के की शादी करता बल्कि बरसों बाप ही अपने बेटे की बीवी बच्चों के खर्चों का ज़िम्मेदार रहता है। एक प्रकार से यह बड़ा ऐब है। इसीलिए यहाँ लड़की के मुक़ाबले में लड़का बोला जाता है वरना लड़का तो कम आयु वाले का अर्थ रखता है।

.............जारी.............

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

देश के सिर्फ तीन फीसदी शिक्षक पढ़ाने के काबिल—

भारत के 20 फीसदी छात्र दुनिया के किसी भी देश के स्कूली छात्रों का मुकाबला कर सकते हैं। लेकिन उनको पढ़ाने वाले शिक्षकों का स्तर काफी नीचे है। सिर्फ तीन फीसदी ही शिक्षक पढ़ाने के लायक हैं। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव (स्कूली शिक्षा) अमरजीत सिंह ने नई दिल्ली में भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) की ओर से स्कूली शिक्षा कार्यक्रम पर आयोजित कार्यक्रम में यह बात कही।

शिक्षकों में प्रशिक्षण की कमी-

उन्होंने कहा कि देश में 60 लाख शिक्षक हैं लेकिन उनमें से अधिकतर पूरी तरह प्रशिक्षित नहीं हैं। शिक्षकों की योग्यता के लिए जो परीक्षाएं ली गईं, उनमें 93 प्रतिशत योग्य नहीं पाए गए। इसलिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना सबसे अधिक ज़रूरी है।

यूपी में कन्या साक्षरता बढ़ी—

सिंह ने कहा कि शिक्षा में सुधार कार्यक्रमों की स्थिति में काफी बदलाव आया है। दलित, मुस्लिम, आदिवासी एवं लड़कियों की तादाद स्कूलों में काफी बढ़ी है। स्कूलों में लड़कियों को साइकिल देने से बिहार, यूपी आदि राज्यों में काफी फायदा हुआ है और कन्या साक्षरता में भी बढ़ोतरी हुई है।

यूपी में मुसलमानों ने नहीं माँगा टिकट-

यूपी के लिए पार्टी की ओर से घोषि 76 प्रत्याशियों में से एक भी प्रत्याशी के मुसलमान न होने के सवाल पर राजनाथ ने कहा कि टिकट देने के समय जिताऊपन भी देखना होता है। मुसलमानों के टिकट के आवेदन यूपी में नहीं आए। बिहार और पश्चिम बंगाल में हमने मुस्लिमों को टिकट दिए हैं। हम चाहते हैं कि अल्पसंख्यक समाज हमारे साथ आए और हम पर भरोसा करे, निराशा नहीं होगी।

यूपी में मुस्लिम आबादी बहुल जिले-

बिजनौर 66%, ज्येतिबा फुले नगर 65%, अम्बेडकरनगर 60.7%, बहराइच 59%, मऊ 58.7%, मुरादाबाद 54.4%, बाराबंकी 53.2%, सहारनपुर 50.2%, बलरामपुर 47%, बरेली 46.7%, मुजफ्फरनगर 46.5%, भदोही 45%, आजमगढ़ 44%, सीतापुर 43.7%, पीलीभीत 43%, गोण्डा 38.2%, कन्नौज 38%, मेरठ 37.2%, जौनपुर 37%, संतकबीरनगर 36.5%, सिद्धार्थनगर 33.9%, और बागपत 31.8% है।

₹87,000 करोड़ की बरबादी- 2011 की रिपोर्ट के अनुसार सड़कों पर जाम और ट्रेफिक कंजेशन के कारण 87,000 करोड़ रूपये का ईंधन बर्बाद हुआ।

देश में लगभग **12** करोड़ वाहनों में **70** लाख व्यवसायिक वाहन हैं। ❑❑